

श्रीः ।

## अथ जातकालंकारविषयानुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
<b>अथ संज्ञाध्याय १.</b>		मुद्रादिरोगयोग ...	... ३४
मगलाचरण ....	... १	खजादिरोग ....	... ३७
श्रयप्रयोजन ....	... ३	सुसुद्धिर्बुद्धियोग ....	... ३७
तन्वादिभाव ...	... ११	हृद्रोगादियोग ....	... ३८
तन्वादिमज्ञा ....	... ४	घणादियोग ....	... ३९
ग्रहशुभिमित्रसमसंज्ञा ....	... ६	उच्चदेहादियोग ....	... ४०
ग्रहदृष्टि ....	... ७	जारादियोग ....	... ४१
<b>अथ भावाध्याय २.</b>		अपकीर्तियोग ....	... ४१
तनुभावफल ....	... ९	द्वौर्भीतियोग ....	... ४२
शुभयोग ....	... १०	स्वस्वरात्मयोग ....	... ४३
घनभाव फल ....	... ११	अस्नेत्रकाणादियोग ....	... ४३
तृतीयभावफल ....	... १२	वामनयोगदुःखरोगयोग ....	... ४६
चतुर्थभावफल ....	... १३	प्लीहादिरोगयोग ....	... ४७
पञ्चमभावफल ....	... १४	हीनागयोग ....	... ४६
सप्तमभावयोग ....	... १६	पत्रादियोग ....	... ४७
रिपुभावफल ....	... १८	पटयोग ....	... ४७
विवाहयोग ....	... २१	अडमृद्धियोग ....	... ४९
गर्भभावयोग ....	... २३	राजवधनयोग ....	... ५०
अष्टमभावयोग ....	... २४	देहदुर्गंधियोग ....	... ४९
नवमभावयोग ....	... २५	<b>अथ विषकन्याध्याय ४.</b>	
दशमभावयोग ....	... २७	विषकन्यायाग ....	... ५२
एकादशभावयोग ....	... २८	विषकन्यादोषनिवारण ....	... ५३
द्वादशभावयोग ....	... ३०	<b>अथ आयुर्दायाध्याय ५.</b>	
<b>अथ योगाध्याय ३.</b>		दुर्धायुयोग ....	... ५४
आयुर्दुर्धायुभिचार- दियोग ....	... ३२	पूर्णायुयोग ....	... ५६

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

## अथ जातकालंकार

भाषाटीकासहितः ।

अथ संज्ञाध्यायः १ ।

मंगलाचरणम् ।

सानन्दं प्रणिपत्य सिद्धिसदनं लम्बोदरं भारतीं  
सूर्यादिग्रहमण्डलं निजगुरुं भक्त्याहृदब्जे स्थि-  
तम् ॥ येषामंत्रिसरोरुहस्मरणतो नानाविधाः  
सिद्धयः सिद्धिं यान्ति लघु प्रयान्ति विलयं प्रत्यू-  
हशैलव्रजाः ॥ १ ॥

अर्थ-श्रीगणेशं गुरुं श्वव स्वेष्टदेवं सरस्वतीम् । प्रणम्य  
क्रियते ह्येषा भाषाटीका सुशोभना ॥ १ ॥ जिनके चरण-  
कमलके स्मरण करनेसे अनेक प्रकारकी सिद्धियां शीघ्रही  
परिपूर्ण होती हैं और विघ्नरूप पर्वतोंके समूह शीघ्रही नष्ट  
होते हैं ऐसे गणेशजीको सरस्वतीको सूर्यादि ग्रहोंके मंडलको  
अपने गुरुओंको हृदयकमलमें स्थित हुए आनंदसहित  
रहनेवाले और सिद्धिके निलय विष्णुभगवान्को प्रणाम  
करके फिर ॥ १ ॥

सद्भावाकलितं पदार्थललितं योगाङ्गलीलाचितं  
श्रीमद्भागवतं शुकास्यगलितं यच्छ्रीधरस्वामिना ॥

( २ ) जातकालंकारः अ० १ ।

सुव्यक्तं क्रियते गणेशकविना गायोक्तितज्जातकं  
वृत्तस्रग्धराया जनादिसुफलं ज्योतिर्विदां जीवनम् २ ॥

अर्थ—श्रीशुकदेवजीके मुखसे प्रगट हुआ ( १० )

कासंस्कृतबद्धजात जैसे श्रीशुकदेवजीके मुखसे प्रगट हुआ  
श्रेष्ठ भक्तिभावोंकरके विशिष्ट, श्रवण कीर्तन आदि  
करके मनोहर, भक्तियोगके यम नियम आदि अंगोंकी लीला  
कहिये उपदेशविशेषोंकरके पूजित, ज्योतिःस्वरूप परमात्माके  
जाननेवालोंका तथा ब्रह्मवेत्ताओंका जीवनके कालक्षेप योग्य  
ऐसा श्रीमद्भागवत पुराण, श्रीधर स्वामीजीने ( टीका रचके  
प्रगट कियाहै तैसेही सद्भाव ( द्वादशभावों करके ) विशिष्ट पदा-  
थंलालिन ( आनंदस्थानोंकरके मनोहर ), योगांग कहिये ग्रह-  
भावदिकोंकी लीलाकरके सुन्दर, ज्योतिर्विद् ( ज्योतिषियों )  
का जीवनरूप ऐसा यह गाथा, दंडकउक्तिसे कहा हुआ, जन  
आदिकोंको सुन्दर फल कहनेवाला जातक स्रग्धरा छंदसे  
गणेशनामक ( मुझ ) कविकरके सुन्दर प्रगट किया जाता  
है अर्थात् मैं गणेशकवि इस जातकको स्रग्धरा छंदकरके  
रचता हूं ॥ २ ॥

यत्पूर्वं परमं शुकास्यगलितं सज्जातकं फक्कि-  
रूपं गूढतमं तदेव विशदं कुर्वे गणेशोऽस्म्य-  
हम् ॥ देवज्ञः सुतरां यशःसुखमातिः श्रीहर्षदं  
स्रग्धरावृत्तैश्चारु नृणां शुभायनपदं श्रीमच्छिवा-  
नुज्ञया ॥ ३ ॥

अर्थ—जो पहले श्रीशुकदेवजीके मुखसे प्रगट हुआ ( छंदरहित होनेसे ) फक्किकारूप अत्यन्त गूढ उत्तम जातक है उसीको दैवज्ञ निरंतर यशसे उत्पन्न हुए सुखमें बुद्धि रखनेवाला में गणेशनामक कवि श्रीमान् शिवनामक गुरुकी आज्ञासे विशद ( तोफा, सुंदर ) लक्ष्मी और कीर्ति देनेवाले आनंदसिद्धिदायक भावोंका स्थानरूप जातकको करता हूँ ॥ ३ ॥

भूयांसः सन्ति भूमौ निजमतिरचनाशालिनःका-  
व्यगुम्फे संख्यावन्तस्तथापि प्रचुरपरगुणानन्द-  
लीलां भजन्ते ॥ चञ्चद्गाम्भीर्यपद्माविबुधविट-  
पिनां जन्मसंप्राप्तिभूतोमर्यादां न स्वकीयां त्यज-  
ति किल महान् रत्नधामा सरस्वान् ॥ ४ ॥

अर्थ—यद्यपि काव्य रचनेमें पृथ्वीतलमें अपनी बुद्धिकी रचना करनेवाले बहुतसे कविजन हैं तथापि वे कविजन विशेषकरके पराये गुणोंसे उत्पन्न हुई आनंदलीलाको भजते हैं क्योंकि प्रकाशमान, गांभीर्य, लक्ष्मी कल्पतरु इन्हेंको उत्पन्न करनेवालाती महान् रत्नोंका स्थान समुद्र अपनी मर्यादाको नहीं त्यागता है तैसेही महान् उत्तमजन अपनी मर्यादामें रहते है ॥ ४ ॥

तन्यादिगाथाः ।

देहं द्रव्यपराक्रमौ सुखसुतो शत्रुः कलत्रं मृतिर्भा-  
ग्यं राजपदं त्रामेण गदिता लभव्ययौ लग्नतः ॥

भावा द्वादश तत्र सौख्यशरणं देहं मतं देहिनां  
 तस्मादेव शुभाशुभाख्यफलजः कार्यो बुधैर्नि-  
 र्णयः ॥ ५ ॥

अर्थ—देह १ द्रव्य २ पराक्रम ३ सुख ४ सुत ५ शत्रु ६  
 कलत्र ७ मूर्ति ८ भाग्य ९ राज्यपद १० लाभ ११ व्यय १२  
 ये बारहों भाव क्रमकरके लग्नसे कहे हैं तहां देहधारी जीवोंके  
 देह ( शरीरही ) सुखका आश्रय कहा है इसलिये पाण्डितज-  
 नोंको तिस देहभावसेही अर्थात् लग्नसेही शुभ अशुभ फलका  
 निर्णय करना चाहिये ॥ ५ ॥

तन्वादि संज्ञाः ।

लग्नं मूर्तिस्तथाङ्गं तनुरुदयवपुः कल्पमाद्यं ततः  
 स्वं कोशार्थाख्यं कुटुम्बं धनमथ सहजं भ्रातृदु-  
 श्चिक्यसंज्ञम् ॥ अम्बा पातालतुर्यं हिबुकगृहसु-  
 हृद्वाहनं यानसंज्ञं वन्ध्याख्यं चाम्बु नीरं जलमथ  
 तनयं बुद्धिविद्यात्मजाख्यम् ॥ ६ ॥

अर्थ—लग्न, मूर्ति, अंग, तनु, उदय, वपु, कल्प, आद्य ये  
 लग्न ( तनुभाव ) के नाम हैं और स्व, कोश, अर्थ, कुटुंब,  
 धन इन नामोंवाला दूसरा भवन है और सहज, भ्रातृ, दुश्चिक्य  
 ये तीसरे भवनकी संज्ञा हैं. अम्बा, पाताल, तुर्य, हिबुक,  
 गृह, सुहृद्, यान, बंधु, अंबु, नीर, जल ये चौथे भवनके नाम  
 हैं और तनय, बुद्धि, विद्या, आत्मज नामक ॥ ६ ॥

वाक्स्थानं पञ्चमं स्यात्तनुजमथ रिषुद्रेषवैरिक्षता-  
ख्यं पष्टं जामित्रमस्तं स्मरमदनमद्यूनकामा-  
भिधामम् ॥ रन्ध्रायुच्छ्रियास्यं निधनलयपदं  
चाष्टमं सृत्युरन्यद्वुर्वाख्यं धर्मसंज्ञं नवममिह शुभं  
स्यात्तपो मार्गसंज्ञम् ॥ ७ ॥

अर्थ—वाक्स्थान ये पांचवें घरके नाम हैं और द्वेष, बैरी,  
क्षत ये छठे घरके नाम हैं. जानित्र, अस्त, स्मर, मदन, मद,  
द्यूत, काम ये सातवें घरके नाम हैं. रन्ध्र, आयु, छिद्र, याम्य,  
निधन, लय, सृत्यु ये आठवें घरके नाम हैं और गुरुनामक,  
धर्मनामसे प्रसिद्ध और शुभ तपोमार्ग ये नवम घरके नाम हैं ॥ ७ ॥

ताताज्ञामानकमस्पदगगननभोव्योममेपूरणाख्यं  
मव्यं व्यापारमृचुर्दशममथ भवं चागमं प्राप्तिमा-  
यम् ॥ इत्थं प्रान्त्यान्तिमाख्यं मुनय इह ततो  
द्वादशं रिःफमाहुर्ग्राह्यं बुद्धा प्रवीणैयं दधि-  
कममुतः संज्ञया तस्य तच्च ॥ ८ ॥

अर्थ—तान, आज्ञा, मान, कर्म, आस्पद, गगन, नभ,  
व्योम, मेपूरण, मध्यम, व्यापार ये दशम घरके नाम कहे हैं  
और ग्यारहवें घरको आगम, प्राप्ति, आय इन नामोंसे कहने  
हैं और प्रात्यान्तिम नामक अर्थात् प्रांत्य, अन्तिम, रिःफ ये  
बारहवें घरके नाम हैं और इस कहे हुए नामममुदायसे जो  
आधिक नाम दीवें वह पण्डितजनोंने निम्नी २ नामक पर्यायसे

जानके ग्रहण कर लेना जैसे वित्त ऐसा नाम हो तो धनका पर्याय होनेसे दूसरा प्रबल जान लेना ॥ ८ ॥

आद्यं तुर्यं कलत्रं दशममिह बुधैः केन्द्रमुक्तं त्रिकोणं पुत्रं धर्माख्यमुक्तं पणफरमुदितं मृत्युलाभात्मजार्थम् ॥ धर्मं चापोक्लिमाख्यं व्ययरिपुसहजं कण्टकाख्यं हि केन्द्रं चैतच्चातुष्टयं स्यात्त्रिकमिह गदितं वैरिरिःफान्तकाख्यम् ॥ ९ ॥

अर्थ—इस शास्त्रसे पण्डितजनेने आद्य १ चतुर्थ ४ सप्तम ७ दशम १० इन चार घरोंकी केंद्र संज्ञा कही है. और कोई केंद्र ( १ । ४ । ७ । १० । इन चार घरों ) कोही कंटक नामकभी कहते हैं. पांचवां ५ नवम ९ घरको त्रिकोण कहते हैं. आठवां ८ म्यारहवां ११ पांचवां ५ दूसरा २ इन घरोंको पणफर कहते हैं. नवम ९ बारहवां १२ छठा ६ तीसरा ३ इन घरोंको आपोक्लिम कहते हैं और छठा ६ बारहवां १२ आठवां ८ इन घरोंकी त्रिकसंज्ञा कही है ॥ ९ ॥

ग्रहाणां शत्रुमित्रसमसंज्ञाः ।

चन्द्रेज्यक्षितिजा रवीन्दुतनयो गुविन्दुसूर्याः क्रमाच्छुक्रार्को रविचन्द्रभूमितनया शार्को सितज्ञौ मताः ॥ अर्कादेः सुहृद्दः समा अथ बुधः सर्वं हि शुक्रार्कजौ भौमाचार्ययमा यमः कुजगुहू पूज्यः परे वैरिणः ॥ १० ॥

अर्थ—चंद्रमा, बृहस्पति, मंगल ये सूर्यके मित्र हैं, बुध समान है, अन्य ( शुक्र, शनि, राहु ) ये शत्रु हैं और सूर्य, बुध चंद्रमाके मित्र हैं, अन्य सब ग्रह सम हैं ( परन्तु राहु तो शत्रुही जानना ) और बृहस्पति, चंद्रमा, सूर्य मंगलके मित्र, शुक्र, शनि सम हैं, अन्य ( बुध ) शत्रु है और शुक्र, सूर्य बुधके मित्र हैं, मंगल, बृहस्पति, शनि ये समान हैं, चंद्रमा शत्रु है और सूर्य, चंद्रमा, मंगल ये बृहस्पतिके मित्र हैं, शनि सम है, अन्य शत्रु हैं और बुध, शनिके मित्र हैं, मंगल, बृहस्पति सम हैं, अन्य शत्रु हैं; शुक्र, बुध शनिके मित्र हैं, बृहस्पति सम है, अन्य कहिये बाकी रहे सूर्य, चंद्रमा, मंगल ये शत्रु हैं ॥ १० ॥

ग्रहदृष्टिः ।

तृतीयदशमे ग्रहो नवमपञ्चमेष्टान्बुनी क्रमाचरणवृ-  
द्धितः स्मरगृहं ततः पश्यति ॥ कुजः सितबुधौ  
शशी रविबुधौ सितक्ष्मासुतौ गुरुर्मशनी गुरुर्भ-  
वनपा इमे मेपतः ॥ ११ ॥

अर्थ—तीसरे दशवें घर सब ग्रह एक चरण दृष्टिसे देखते हैं, नवम पांचवें दो चरण दृष्टिसे देखते हैं. आठवें चौथे तीन चरण दृष्टिकरके देखते हैं और सातवें घरमें स्थित सब ग्रह चार पददृष्टिसे अर्थात् पूर्णदृष्टिसे देखते हैं ( अन्य ग्रंथका यहभी मन है कि तीसरे दशवें शनि, नवम पांचवें बृहस्पति,



( ८ ) जातकालंकारः अ० २ ।

चौथे आठवें मंगल पूर्ण दृष्टिसेही देखते हैं ) और मंगल १  
शुक्र २ बुध ३ चंद्रमा ४ सूर्य ५ बुध ६ शुक्र ७ मंगल ८  
बृहस्पति ९ शनि १० शनि ११ बृहस्पति १२ ऐसे क्रमसे  
मेघ आदि राशियोंके ये स्वामी कहे हैं. तहां मंगल मेघका  
स्वामी शुक्र वृषका स्वामी इसी क्रमसे १ आदि अंक राशि-  
योंके समझना ॥ ११ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते स्मरितोपेऽलंकाराख्ये जातके  
मंजुलंऽस्मिन् ॥ संज्ञाध्यायः श्रीगणेशेन वर्षेवृत्तै-  
र्दिग्भिः संयुतोऽयं प्रणीतः ॥ १२ ॥

इति जातकालंकारे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अर्थ—श्रीगणेशनामक कविने मनोहर छंदोंकरके रचे हुए  
जातकालंकार नामक इस ग्रंथमें श्रेष्ठ दश श्लोकोंकरके यह  
प्रथम अध्याय रचा है ॥ १२ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

**अथ भावाध्यायः २ ।**

शुकाननसरोरुहाद्भ्रूलितमत्र भ्रूमीतले फलं परम-  
सुंदरं सकलमाकलय्याधुना ॥ ब्रवीमि तनुभा-  
वतः प्रवरदेववित्तोपदं यदत्र मम चापलं किंपपि  
तत्क्षमध्वं बुधाः ॥ १ ॥

अर्थ—मैं गणेशकवि अब श्रीशुकदेवजीके मुखसे प्रचलित होके यहां पृथ्वीपर शिष्यप्रशिष्यद्वारा प्राप्त हुए परम सुन्दर संपूर्ण फलको विचारके उत्तम दैवज्ञोंकी प्रसन्नताके वास्ते तनुभावसे लेके सब भावोंको कहता हूं. हे पांडितजनो ! जो यहां कुछ चपलता, न्यूनता हो उसको क्षमा करो ॥ १ ॥

अथ तनुभावफलम् ।

देहाधीशः स पापो व्ययरिपुमृतिगश्चेत्तदादेहसौख्यं न स्याज्जन्तोर्निजक्षे व्ययरिपुमृतिपस्तत्फलस्यैव कर्ता ॥ मूर्तो चेत्क्रूरखेटस्तदनुतनुपतिः स्वीयवीर्येण हीनो नानातंकाकुलः स्याद्भ्रजति हि मनुजो व्याधिमाधिप्रकोपम् ॥ २ ॥

अर्थ—लग्नका स्वामी पापग्रहसे युक्त हो अथवा वारहवें १२ छठे ६ आठवें ८ घरमें पडा हो तो उसको देहका सुख नहीं होवे और द्वादशभावका पति वारहवें घर हो, छठे घरका पति छठे घर हो आठवें घरका पति आठवें घर हो तोभी यही फल करनेवाला है अर्थात् देहसुख नहीं हों. ( परंतु बृहज्जातकमें यह शुभ योग कहा है इसलिये दूसरा अर्थ यह जानना कि लग्नपति पापग्रहसे युक्त हो अथवा १२, ६, ८ इन स्थानोंके स्वामियोंके संगमेंही पडा हो तो देहसुख नहीं जानना और लग्नमें क्रूर ग्रह हो, लग्नका पति अपने बलकरके हीन हो तो वह मनुष्य अनेक पीडा, रोग, चिंताओंको प्राप्त होवे ) ॥ २ ॥

अथ शुभयोगाः ।

अङ्गाधीशः स्वगेहे बुधगुरुकाविभिः संयुतः केन्द्र-  
गो वा स्वीये तुङ्गे स्वमित्रे यदि शुभभवने वीक्षितः  
सत्त्वरूपः ॥ स्यान्ननं पुण्यशीलः सकलजनमतः  
सर्वसम्पन्निधानं ज्ञानी मन्त्री च भूपः सुराचिरन-  
यनो मानवो मानवानाम् ॥ ३ ॥

अर्थ—लग्नका पति लग्नमें हो अथवा बुध, बृहस्पति, शुक्रसे  
युक्त होके केन्द्रमें पडा हो अथवा उच्चका हो अथवा अपने  
मित्रके घरमें हो अथवा शुभग्रह अर्थात् नववें ९ घरमें हो वा  
शुभ ग्रहसे दृष्ट हो तो वह मनुष्य मनुष्योंके मध्यमें राजा हो  
अथवा मंत्री हो, सब संपत्तियोंका स्थान हो, ज्ञानी और  
सत्त्वगुणी रूपवाला सुंदर नेत्र आदि उत्तम शरीरवाला पुण्य-  
वान् संपूर्ण जनोंकरके मान्य होवे ॥ ३ ॥

लग्ने क्रूरेऽथ याते खलखचरगृहं लग्ननाथे खान्द्रू  
क्रूरान्तस्थानसंस्थावथ दिनपनिशानाथयोर्धून-  
यायी ॥ भूमीपुत्रस्तु पृष्ठादुदयमधिगतश्चन्द्रजश्चे  
न्मनस्वी स्यादन्धो दुष्टकर्मा परभवनरतः पूरुपः  
क्षीणकायः ॥ ४ ॥

अर्थ—लग्नका पति क्रूर ग्रहकी राशिपर स्थित हो अथवा  
सूर्य चंद्रमा क्रूरग्रहोंके मध्य ( बीच ) में स्थित हों यह दूसरा  
योग हुआ और सूर्यमे वा चंद्रमासे सातवें स्थानमें मंगल हो

और बुध पिछली राशिपर स्थित होवे तो इन तीन योगोंमें एक योगकेभी होनेसे उदार मनवाला अंधा दुष्टकर्म करनेवाला पराई स्त्रीसे रमण करनेवाला क्षीण शरीरवाला मनुष्य होवे यहाँ उदार चित्तवाला चंद्रमाके बलकी अपेक्षासे जानना ॥ ४ ॥

अथ धनत्तावफलम् ।

कोशाधीशः स्वराशौ सुरगुरुसहितः सर्वसंपत्प्रदः  
स्यात् केन्द्रे वाथ त्रिके चेद्भवति हि मनुजः कु-  
शभाग् द्रव्यहीनः ॥ स्वान्त्याधीशौ त्रिकस्थौ  
कवितनुपयुतौ स्यात्तदा नेत्रहीनश्चन्द्रः पापेन  
युक्तो धनभवनगतः शुक्रयुङ् नेत्रहीनः ॥ ५ ॥

अर्थ—धनस्थानका पति बृहस्पतिसे युक्त होके अपनी रा-  
शिका हो अथवा केन्द्रस्थानमें स्थित हो तो संपूर्ण संपत्तियोंको  
देनेवाला होता है और बृहस्पतिसे युक्त होके छठे, आठवें,  
बारहवें घरमें हो तो द्रव्यसे हीन होवे और धनस्थानका तथा  
बारहवें घरका पति शुक्र और बृहस्पतिसे युक्त होके पडे हों  
तो जन्मनेवाला अंधा होवे और शुक्र तथा पापग्रहसे युक्त होके  
चंद्रमा धनभवनमें पडे तोभी वह मनुष्य अन्धा हो ॥ ५ ॥

शुक्रः सेन्दुस्त्रिकस्थो जनुपि निशिनरः प्राप्नुयाद्  
न्धकत्वं जन्मान्वः सार्कशुक्रस्तनुभवनपतिः  
स्यात्तदानीं मनुष्यः ॥ एवं तातानुजाम्वासुत-  
निजगृहिणीस्थाननाथाः स्थिताश्चेदादेश्यं तत्र  
तेषां प्रवरमतिर्युतैरन्धकत्वं तदानीम् ॥ ६ ॥

अर्थ—चंद्रमासहित हुआ शुक्र छठे आठवें बारहवें घरमें पडा हो तो रात्रिमें अंधा रहनेवाला ( रतंधीवाला ) जन हो, जो यदि सूर्य शुक्रसे युक्त हुआ लग्नेश ६ । ८ । १२ घरमें हो तो जन्मांध होवे, इसी प्रकारसे पिता, भ्राता, पुत्र, स्त्री, माता इन स्थानोंके स्वामीजी जो सूर्य, चंद्र, शुक्र इनसे युक्त हो ६ । ८ । १२ इन घरोंमें हों तो येभी अंधे बताने पण्डितजनोंने ऐसा विचार करना चाहिये ॥ ६ ॥

अथ तृतीयभावफलम् ।

भ्रातृस्थानेशभौमौ व्ययरिपुनिधनस्थानगौ बन्धु-  
हीनः स्वक्षेत्रे सौम्यदृष्टे सहजभवनपे मानवःस्या-  
च्च तद्भान् ॥ केन्द्रस्थे बन्धुसौख्यं शुभविहगयुते  
स्याददभ्रं नराणां पापैश्चेदन्यथैतत्तदलु निजधिया  
ज्ञेयमित्थं समस्तम् ॥ ७ ॥

अर्थ—भ्रातृस्थानका पति और मंगल बारहवें, छठे, आठवें घर पडें तो जन्मनेवाला जन बंधुसे हीन होवे और जो यदि वह तीसरे घरका पति अपने घरमें पडा हो अथवा शुक्रग्रहसे दृष्ट हो तो बंधुसे युक्त होवे, जो यदि तृतीय घरका पति केंद्रस्थानमें हो शुभग्रहोंसे युक्त होवे तो बंधु ( भाई ) का सुख बहुत होवे और पापग्रहोंसे युक्त होके केंद्रस्थान १ । ४ । ७ । १० में हो तो बंधुका सुख नहीं हो ऐसा पंडितजनोंने संपूर्ण हाल अपनी बुद्धिसे विचारके कहना ॥ ७ ॥

अथ चतुर्थभावफलम् ।

पातालेशः स्वराशौ शुभखचरयुतो भाग्यनाथेन  
युक्तः सामन्तः स्यात्ततश्चेत्सुरपतिगुरुणावाहने  
शस्तनुस्थः ॥ संदृष्टो राजपूज्यस्तदनु च  
हिन्दुकाधीश्वरो लाभसंस्थो यानं पश्यन्नराणां  
निवहमभिमतं वाहनानां प्रदत्ते ॥ ८ ॥

अर्थ—चौथे घरका पति अपनी राशिपर शुभग्रहसे और  
नवम घरके स्वामीसे युक्त होके पडे तो राजा हो, फिर जो  
यदि चौथे घरका पति लग्नमें स्थित हो और बृहस्पतिसे पूर्ण  
दृष्टि करके दृष्ट हो तो राजपूज्य होवे, जो यदि यही चौथे  
घरका पति बृहस्पतिसे दृष्ट हुआ ग्यारहवें घरमें स्थित हो  
और चौथे घरको देखता हो तो मनुष्योंके वास्ते हस्ती घोडा  
आदि वाहनोंका बहुत पूरा सुख देवे ॥ ८ ॥

स्वक्षेत्रे तुर्यनाथस्तनुपतिसहितः स्यादकस्माद्गृ-  
हातिः सौहार्दं वा सुदृष्टिस्तदितरगृहगश्चेद्गृहाल-  
भ्ययोगः ॥ यावन्तः पापखेदा धनदशमगृहप्रान्तप-  
पैश्चेन्निकस्था युक्तास्तावत्प्रमाणज्वलनवशगताः  
क्लेशदाः स्युर्गृहा नुः ॥ ९ ॥

अर्थ—अथ गृहप्राप्ति आदि योग, चौथे घरका पति जो  
अपने क्षेत्र ( ४ घर ) में लग्नपतिसे युक्त होके बैठा हो तो  
बिनाही यत्न घर ( मकान ) की प्राप्ति होवे और मित्र हित-

कारक जनोंके संग प्रीति बढे जो यदि चौथे घरके विना अन्यही घरमें हो तो गृहप्राप्तिका अभाव हो और जितने पाप ग्रह दूसरे, दशमें, बारहवें घरके स्वामीके साथ होके विक्र ६। ८ । १२ घरोंमें हो उतनेही घर ( मकान ) मनुष्यके अग्निसे जल जाते हैं इसीवास्ते दुःखदायी होते हैं ॥ ९ ॥

यावन्तो वाहनस्था शुभविहगदृशां गोचरा नो भवेयुस्तावन्तो वा विरामाः परमगुणवतां वाहनानां नृणां स्युः ॥ क्रूराः पश्यन्ति यानं व्ययनिधनगताश्चेत्तदा तद्देव प्राज्ञैरादेश्यमेपां खलु शुभकरणं शान्तिकं वाहनानाम् ॥ १० ॥

अर्थ—जितने पापग्रह चौथे घरमें स्थित हों और शुभग्रहोंके दृष्टी नहीं हों तो उतनेही परम उत्तम गुणवाले वाहन ( हस्ती घोडा आदि ) नष्ट हों और जो यदि किसीके १२ । ८ इन घरोंमें पापग्रह बैठके फिर वे पापग्रह चौथे घरको देखते हों तो पूवाक्त फल अर्थात् वाहन नष्ट होंगे ऐसा बताना तहां पंडित जनोंने वाहनोंकी शुभकारक शांति करना चाहिये ॥ १० ॥

अथ पंचमभावफलम् ।

विद्यास्थानाधिपो वा बुधगुरुसहितशुक्रे, वर्तमानो विद्यादीनो नरः स्यादथ नवमनिजक्षेत्रकेन्द्रेषु तद्भान् ॥ बालत्वं वृद्धता वा यदि गगनरादां

जन्मकाले तदा स्यात्प्रज्ञामान्द्यं नराणामथ यदि  
विहगः स्वर्क्षगो दोषहृत्स्यात् ॥ ११ ॥

अर्थ—पांचवें घरका पति अकेला अथवा बुध बृहस्प-  
तिसे युक्त होके त्रिक ६ । ८ । १२ इन घरोंमें पडा हो तो  
वह नर विद्याहीन होवे और जो वह पंचमेश ५।९ केंद्र १ ।  
४ । ७ । १० इन घरोंमें हो तो विद्यावान् होवे और  
जन्मसमयमें बुद्धिकारक ग्रहोंकी बालसंज्ञा हो अथवा वृद्ध-  
संज्ञा होवे तो मंदबुद्धि होवे. जो यदि वही बालवृद्धती अपने  
क्षेत्रका होवे तो मंदबुद्धिका दोष दूर होता है ॥ ११ ॥

वाक्स्थानेशो गुरुर्वा व्यपरिपुविलयस्थानगोवा  
ग्विहीनश्चैवं पित्रादिकानां पतय इह युता मूकता-  
स्याच्च ताभ्याम् ॥ वागीशात्पञ्चमेशाद्विक्रमवन्-  
गतः पुत्रधर्माङ्गनाथा रन्ध्रे द्वेष्यान्तिमस्था यदि  
जनुपि नृणामात्मजानामभावः ॥ १२ ॥

अर्थ—जो यदि पांचवें घरका पति अथवा बृहस्पति वार-  
हवें, छठे, आठवें स्थानमें पडा हो तो जन्मनेवाला जन गुंगा  
हो इसी प्रकार पिता आदिकों ( दशम भाव आदिकों ) के  
पति पंचमेश और बृहस्पतिसे युक्त होके ६ । ८ । १२ घरमें  
होवें तो पिता आदिकोंको गुंगा बताना. यहां आदिशब्दसे  
भाई पुत्र आदिका स्थान देखना. बृहस्पतिकी राशिसे ६ ।  
८ । १२ घरमें पंचमेश होवे और पांचवें गम लघ्नका पति



जन्मलग्नकी राशिसे ६ । ८ । १२ राशिपर होवे तो मनु-  
ष्योंके पुत्रका अभाव बताना ॥ १२ ॥

किंचित्कालं विलम्बः शुभखगसहितास्तेऽथकर्के  
सुतर्क्षे चन्द्रे कन्याप्रजावान् प्रमिततनयवांश्चाथ  
देवेन्द्रपूज्यात् ॥ क्रूरश्चेत्पञ्चमस्थः सुतभवनगतः  
स्यात्तदाऽपत्यहीनश्चायापुत्रस्वगेहाद्यदि भगव-  
ति सुते सूनुरेकेस्तदानीम् ॥ १३ ॥

अर्थ-५ । ९ । १ घरके पति शुभग्रहोंसे पुक्त हों  
तो संतान उत्पन्न होनेमें कुछ कालकी देरी होवे, जो यदि  
कर्कराशिका चंद्रमा पांचवें घरमें हो तो कन्यासन्तान ही  
अथवा अल्प १ ही पुत्र होवे और बृहस्पतिसे पांचवें घरमें  
क्रूर ग्रह हो अथवा वह क्रूर ग्रह लग्नसे पांचवें घरमें होवे तो  
संतान नहीं हो जो यदि अपनी राशिसे पांचवें घर अर्थात्  
२ । ३ को शनि होवे तो एकही पुत्र हो, पूर्वोक्त क्रूर योग  
होनेसे और क्रूर दृष्टि होनेसे यह फल होते हैं ॥ १३ ॥

कुम्भे चेत्पञ्च पुत्रास्तदनु च मकरे नन्दनेऽप्या-  
त्मजाः स्युस्तिस्त्रो भौमःसुतानां त्रितयमथ सुता-  
दायको रौहिणेयः ॥ इत्थं काव्यः शशांको जनु-  
पि च गुरुणा केवलनैव पुत्राः पञ्च स्युःक्षेत्राह्वाः  
क्रियवृषभवने कर्कटे नो विलम्बः ॥ १४ ॥

अर्थ-पांचवें घरमें कुम्भका शनि पडा हो तो पांच पुत्र  
हों और मकरका होके हो तो तीन पुत्र हों, जो यदि

मकरका मंगल ५ वें घरमें हों तो तीन पुत्र हो, जो पांचवें घरमें बुध हो तो कन्या हो, ऐसे ५ वें घरमें शुक चंद्रमा हो तो भी पुत्री होवे, जन्मसमय ५ वें घरमें अकेलाही बृहस्पति हो तो ५ पुत्र होते हैं जो यदि ५ वें घरमें मेष वृष कर्क इन राशियोंके राहु केतु पडे हों तो संतान होनेमें कुछ विलंब नहीं हो (इससे विपरति सब बात हो तो विलंब जानना) ॥ १४ ॥

पापो वा वासवेज्यः सुखभवनगतः पञ्चमे वाऽष्ट-  
मे वा शीतांशुः सन्ततेः स्यात्खगुणमितसंमातु-  
ल्य एव प्रबन्धः ॥ यावन्तः पापखेटास्तनयगृह-  
गताः सौम्यदृष्ट्या न दृष्टास्तावद्दर्पप्रमाणो नियत-  
मिह भवेत्संततेर्वाविलम्बः ॥ १५ ॥

अर्थ—पापग्रह अथवा बृहस्पति ४ घरमें होवे अथवा ५ । ८ घरमें चंद्रमा हो तो तीस वर्षतक संतान होनेका बंध देरी रहे और जितने पाप ग्रह पांचवें घरमें बैठे हों शुभ ग्रहोंसे दृष्ट नहीं हों तो उतनेही वर्षोंतक निश्चय संतान होनेका विलंब कहना ॥ १५ ॥

तत्प्रसिद्धिर्ममूला तदनु बुधकवी शंकरस्याभिप्रे-  
काच्चन्द्रश्चेत्तद्भदेव त्रिदिवपतिगुरुर्मंत्रयंत्रौपधी-  
नाम् ॥ सिद्ध्या मंदारसूर्या यदि शिखितमसी  
तत्र वंशेशपूजा कार्थीमायोक्तरीत्या बुधगुरुव-  
पाः क्षिप्रमेवात्र सिद्धिः ॥ १६ ॥

अर्थ—तिस्र संतानकी प्राप्ति हरिवंशश्रवण संताभगोसाल मंत्र जप इत्यादिक धर्मसे होती है तहां ऐसा विशेष है कि बुध शुक्र संतानका विलंब करते हों तो शिवजीका आभिषेक ( मंत्रपूर्वक ) करवावे, चंद्रमा विलंबकारक हो तोभी यही विधि कराना, जो बृहस्पति संतानका निरोधक हो तो मंत्र यंत्र औषधी ( लक्ष्मणादि ) सेवन करानेकी सिद्धिसे संतान हो. शनि, मंगल, सूर्य, राहु इनमें जो एक कोई प्रतिबंधक होवे तो कुलदेवताका पूजन वेशेक्त रीतिसे करना. तहां बुध बृहस्पति जो ९ घरके गि हों तो ( कुछ यत्नसे ) शीघ्रही सिद्धि होवे ॥ १६ ॥

बुध हो तो हृदयपर, बृहस्पति हो तो नाभिके समीप ऋण चिह्न बताना ॥ १७ ॥

नेत्रे पृष्ठे च शुक्रो दिनकरतनयः स्यात्पदे चाधरे  
चेत्केतुर्वा संहिकेयस्तदनु तनुपतिर्भौमावित्क्षेत्रसं-  
स्थः ॥ आभ्यामालोकितः सन् भवति हि कति  
चित्स्थानगो वा तदानीं नेत्रे रोगी नरः स्यात्प्रव-  
रमतिर्युतेर्हौरिकैर्ज्ञेयमेवम् ॥ १८ ॥

अर्थ—शुक्र हो तो नेत्रपर, शनि हो तो पीठपर, राहु हो तो पैरके ऊपर, केतु हो तो होठपर व्रणका चिह्न बताना. अब नेत्रव्याधिके योगको कहते हैं कि लग्नका पति मंगल और बुधकी राशिपर स्थित हो इनसेही देखा जाना हो तो चाहे वह लग्नपति किसी स्थानमें पडा हो परंतु वह नर नेत्ररोगी है ऐसा दैवज्ञ जनोंने जानना ॥ १८ ॥

पप्रेक्षे लग्नयाते भवति हि मनुजो वैश्विहन्ता धन-  
स्थे पुत्रात्तार्थोऽतिदुष्टः सहजभवनगे ग्रामदुः-  
खाकरः स्यात् ॥ नाभिस्थाने च रोगी तनुनि-  
धनपती शत्रुभावस्थितौ ना नेत्रे वामेतरे स्याः-  
सुरकुलगुरुः सूर्यजस्त्वंधिरोगी ॥ १९ ॥

अर्थ—छठे घरका पति लग्नमें पडा हो तो जन्मवेवाला जन शत्रुको नष्ट करनेवाला हो और जो धनस्थानमें पडा हो तो पुत्रकरके धन हरा जावे, वह नर अत्यन्त दुष्ट हो, नींदरे वरमें जो छठे स्थानका पति हो तो ग्रामको दुःख देनेवाला

और नाभिकी जगह रोगवाला होता है, लग्न और आठवें घरका पति छठे घरमें हो तो वह नर बायें नेत्रमें रोगवाला हो और ६ । ८ वें घरमें शुक्र हो तो दाहिने नेत्रमें रोग हो, शनैश्वर होवे तो पीठपर वा चरणपर रोग बताना ॥ १९ ॥

दन्ते दन्तच्छदे वा कुमुदपतिरिपुः संस्थितः पट्ट-  
भावे केतुर्वा लग्ननाथः कुजबुधभवने संस्थितः  
क्वापि दृष्टः ॥ स्वेन प्रत्यर्थिना वा भवति जनुपि  
चेदासनाथे सरोगस्तौ भूमीसूर्यपुत्रौ यदि रिपुगृ-  
हगौ तद्भवः स्याद्गदो नुः ॥ २० ॥

अर्थ—जो यदि राहु केतु छठे घरमें हो तो दातपर अथवा होंठपर रोग बताना और मंगल तथा बुधकी राशिपर स्थित हुआ लग्नेश अपने शत्रुकरके पूर्ण दृष्टिसे देखा हुआ हो तो चाहे किसी घरमें भी होवे तोभी गुदाके समीपमें रोग होवे, जो यदि मंगल शनि छठे घरमें हो तो वह रोग ऐसे बताना कि मंगल हो तो रुधिरका विकार, शनि हो तो अन्यविकार बतावे ॥ २० ॥

प्रालेयांशौ रिपुस्थे खलखगसहिते मानवो रोगवान्  
स्यात्कूरेनिष्पीडितश्चेत्तनुसदनगतः शीतरश्मि-  
स्तदानाम् ॥ कूरे केन्द्रालयस्थे यदि शुभविह-  
गैर्नेक्षिते रोगवान् स्यात्तस्मिन् काव्यालयस्थे  
कुजगुरुकविभिर्नाक्षिते तद्भदेव ॥ २१ ॥

अर्थ—जो यदि चन्द्रमा पापग्रहसे युक्त होके छठे घरमें बैठा होवे तो और शनि आदि क्रूर ग्रहोंकरके दृष्टि वा योगकरके पीडित होके लग्नमें चंद्रमा पडा तोभी रोगी हो. जो यदि क्रूर ग्रह केंद्रस्थानमें हो शुभ ग्रहोंकरके दृष्ट नहीं हो तो रोगी हो, वह क्रूर ग्रह शुक्रकी राशिपर हो मंगल शुक्र बृहस्पति इनकरके देखा नही गया हो तो रोगी होवे. यहाँ रोगकारक ग्रहके स्वभावके अनुसार कफ वात आदिकी बीमारी कहना ॥ २१ ॥

पुंलग्ने स्वीयतुङ्गे रिपुभवनपतौ वीक्षिते सन्नभो-  
गैरङ्गे चूनं नराणामरिजनवशतः स्याद्गदो गूढ-  
रूपः ॥ रिः फस्थाने स्थिते चेदरिसदनपतौ सिंहि-  
कापुत्रयुक्ते किंवा सप्ताश्वयुक्ते परगृहवसतिर्नीच-  
वृत्तिर्नरः स्यात् ॥ २२ ॥

अर्थ—छठे घरका पति पुत्र्य लग्नकी राशिपर हो वा स्वोच्चका हो पापग्रहोंकरके दृष्ट होवे तो मनुष्योंके शरीरमें शत्रुओंकरके किया हुआ रक्त रोग बताना. छठे घरका पति राहुसे युक्त होवे अथवा सूर्यसे युक्त होवे अथवा १२ वें घरमें स्थित होने तब वह जन पराये घरमें रहनेवाला तथा नीचवृत्तिवाला होय ॥ २२ ॥

अथ विवाहयोगः ।

यावन्तो वा विहङ्गा मदनसदनगाश्चेन्निजाधीश-  
दृष्टास्तावन्तो निर्विवादास्त्वथ सुमतिमता ज्ञेय-

मित्थं कुटुम्बे ॥ कार्यो होरागमज्ञैरधिकबलवतां  
खेचराणां हि योगादादेश्यं तत्र वीर्यं रविविधुकु-  
भुवामङ्गदिवशैलसंख्यम् ॥ २३ ॥

अर्थ—जितने ग्रह सातवें घरमें स्थित हों सतमेशकरके दृष्ट हों उतनेही विवाह पुरुषके होने चाहिये. उत्तम बुद्धिवाले देव-  
ज्ञाने इसी प्रकार कुटुम्बमें पिता भाई आदिकोंकेभी विचारने.  
जातकशास्त्रवेत्ता पंडितजनोंने अधिक बलवाले ग्रहोंके योगसेभी  
विचार करना जैसे पड़वलमें सूर्यके छःरूप हैं, चंद्रमाके दश  
हैं, मंगलके ७, अन्योमें ६ हैं, इनमें यथाक्रमसे ये ग्रह बली  
होते हैं ऐसा विचार करना ॥ २३ ॥

केन्द्रस्था वा त्रिकोणे यदि खलु गृहिणीकारका-  
ख्या नभोगाःकामार्थेशौ निजक्षे परिणयनविधिः  
स्यात्तदानीं नुरेकः ॥ जायाधीशः कुटुम्बाधिप-  
तिरपि युतश्चेत्रिके गहिताख्यैर्यावद्भिः शुक्रयुक्तो  
नियतमिह भवेत्तावतीनां विरामः ॥ २४ ॥

अर्थ—स्त्रीकारक ( शुक्र, चंद्र, गुरु, बुध ) ग्रह केंद्रमें  
स्थित हों अथवा ८ । ७ घरमें स्थित हों और सातवें दूसरे  
घरका पति अपने घरोंमें होय तो एकही विवाह होना कहे और  
सप्तम भावका पति अथवा दूसरे घरका पति शुक्रसे युक्त होके  
जितने क्रूर ग्रहोंकरके दृष्ट हुआ त्रिक ६ । ८ । १२ घरमें  
पडा हो उतनीही स्त्रियोंकी मृत्यु होय ॥ २४ ॥

अथ गर्भजावयोगः ।

लग्नस्थे सप्तसप्तौ दिनमणितनये कामगे चार्कम-  
न्दौ द्यूने चन्द्रे नभःस्थे नच यदि गुरुणालोकिते  
नां प्रसूते ॥ द्वेष्येण मित्रमन्दौ द्विपि सितकिर-  
णेऽस्ते बुधेनेक्षिते नां सूते द्वेष्ये जलक्षे यदि कुज-  
रविजौ गर्भिणी स्यान्न नारी ॥ २५ ॥

अर्थ—सूर्य लग्नमें हो, शनि सातवें घरमें हो यह १ योग  
और सूर्य शनि सातवें होवे, बृहस्पतिकी दृष्टिसे रहित हुआ  
चंद्रमा दशवां होय यह दूसरा योग इन दोनों योगोंके होनेसे  
तिस पुरुषकी स्त्री संतान नहीं जने और छठे घरका पति तथा  
सूर्य शनि छठे घरमें हों बुधकरके दृष्ट होवें और चंद्रमा  
सातवें घरमें होवे तो स्त्री संतान नहीं जनेगी और जो मंगल  
शनि छठे घरमें हों अथवा चौथे घरमें हों तो स्त्री गर्भवती नहीं  
हो ऐसे ये चार वंध्यायोग हैं ( पुरुषके ग्रहोंसे सब फल  
जानना ) ॥ २५ ॥

अथाष्टमजावयोगः ।

रन्ध्रस्थानस्थिता वा स्थिरभवनगताःशुक्रवागी-  
शसौम्याः कृच्छ्राणां कर्मणां ना भवति हि निय-  
तं कारकः स्तब्धभावः ॥ बाल्ये दुःखी नरः  
स्यान्निधनगृहपतौ लाभयाते सुखी स्यात्पश्चात्  
पापेऽल्पमायुः शुभखगसहिते दीर्घमायुर्नरा-  
णाम् ॥ २६ ॥



अर्थ—शुक्र बृहस्पति बुध ये आठवें घरमें हों अथवा स्थिरराशिपर हों तो निरंतर कष्ट ( कठोर ) कर्म करनेवाला और कठिनचित्तवाला होवे और अष्टमभावका पति ११ घरमें हो तो बाल्य अवस्थामें दुःखी रहे पीछे सुखी होवे और ८ घरका पति पापग्रह हो ११ घरमें बैठा हो तो अल्प आयु कहे, जो यदि वह शुभ ग्रहसे युक्त होके बैठा हो तो दीर्घ आयु बताना ॥ २६ ॥

कुर्यादायुर्गृहेशः खलवगयुगरिप्रान्त्यसंस्थोऽल्प-  
मायुश्चेन्नार्धाशयुकोऽग्निधनभवनपः स्वल्प-  
मायुः प्रदत्ते ॥ रन्ध्रस्थो वा चिरायुस्तदनु रवि-  
भवस्तत्र तद्वल्लयेशः क्लेशस्थानस्थितश्चेज्जनुपि  
हि मनुजो वैरियुक् तस्करः स्यात् ॥ २७ ॥

अर्थ—आठवें घरका पति क्रूरग्रहसे युक्त होके छठे और १२ वें घरमें हो तो अल्प आयु बताना, जो यदि ८ घरका पति लभेशकरके युक्त होके ६ । १२ वें घरमें हो तो स्वल्प आयु करता है और आठवें घरका पति आठवें घरमेंही हो अथवा ८ वें घरमें गति हो तो दीर्घ आयु होवे, जो यदि अष्टम घरका पति धनस्थानमें जन्मसमयमें पड़ा हो तो यह मनुष्य चोर हो और शत्रुकरके युक्त रहे ॥ २७ ॥

आयुर्दंष्ट्राधिनाथो निधनरिपुगतो हीनवीर्यो  
प्रसूतो संग्रामे कीर्तिशेषं व्रजति बल्युतो तौ

सदा तज्जयातिम् ॥ शुक्रेणान्दोलिकायास्तनुपवि-  
धियुतो वाहनस्थाननाशो मूर्तो दन्तावलेन्द्रैरथ धो  
गुरुसहितः स्याज्जयो वाजिवाहैः ॥ २८ ॥

अर्थ—जिसके जन्मसमय हीन बलवाले हुए लग्नेश और  
अष्टम घरका पति ६।८ वें घरमें हो तो वह नर युद्धमें उलटा  
होके मृत्युको प्राप्त होता है वेही ८।९ के पति बली होवे  
तो युद्धमें विजय पानेवाला हों, चौथे घरका पति शुक्रसे युक्त  
होवे तो पानसमें बैठा हुआ विजय पावे और चौथे घरका  
पति लग्नेश और चंद्रमाकरके युक्त हो लग्नमें स्थित होवे तो  
महाहस्तियोंकरके विजय पावे अथवा चौथे घरका पति बृह-  
स्पतिसे युक्त होके लग्नमें पडा हो तो घोड़े और हस्तियोंकरके  
विजय पावे ॥ २८ ॥

अथ नवमभावयोगः ।

भाग्येशो मूर्तिवर्ती सुरपतिगुरुणालोकितो  
भूपवन्द्यो लग्नस्थो वाहनेशो नवमपतिरुभौ  
पश्यतश्चेत्स्वगेहम् ॥ सर्वासामारूपदं स्यान्मनुज  
इह तदा सम्पदां वाहनेन्द्रो रन्ध्रस्थानस्थितश्चे-  
द्भ्रजति हि मनुजो भाग्यराहित्यमेवम् ॥ २९ ॥

अर्थ—नववें घरका स्वामी बृहस्पति दृष्ट होके लग्नमें पडा  
हो तो जन्मनेवाला जन राजाओंसे मान्य हों, नववें घरका  
पति लग्नमें बैठा हो और चौथे घरका पति, तथा नववें घरका

पति, दोनों अपने २ घरको पूर्णदृष्टिकरके देखते हैं तो वह मनुष्य संपूर्णसंपत्तियोंका आश्रय हो अर्थात् सर्वसंपत्तिमान् हो और चौथे घरका पति आठवें घरमें बैठा होय तो वह मनुष्य भाग्यहीन होता है ॥ २९ ॥

हीनानां वाहनानां तदनु चपलताप्राप्तिरेवं नराणां  
ज्ञेया होरागमज्ञैरथ नवमपत्तौ लाभगे राजवन्द्यः ।  
दीर्घायुर्धर्मशीलस्तदनुधनवपूर्वाहनेशः स्वगेहे  
धर्मेशो लग्नवर्ती जनुपि यदि गजस्वामिसिंहास-  
नानाम् ॥ ३० ॥

अर्थ—इस श्लोकमें कही हुई भाग्यहीनताका लक्षण यह है कि अवस्था बल आदिसे रहित हुए वाहनोंकी प्राप्ति हो फिर चपलता हो अर्थात् स्थिरभी नहीं रहे ऐसे होराशास्त्रके जाननेवालोंको बताना चाहिये और नववें घरका पति ११ घरमें पडा हो तो राजासे मान्य दीर्घ आयुवाला तथा धर्म स्वभाववाला होवे फिर जन्मसमयमें धन २ लग्न १ चतुर्थ ४ इन घरोंके पति अपने ० घरोंमें स्थित होंगे तो और ८ घरका पति लग्नमें पडा हो तो हस्ती राज्यमिंहामन आदिकोंकी प्राप्ति होय ॥ ३० ॥

योगानां स्यादमीपां प्रचुरबलयुतो योऽधिपस्तद्द-  
शार्या लब्धिश्रान्तर्दशायामथ गुरुभृगुजो वाहनान-  
धीशयुक्तो ॥ केन्द्रे याने त्रिकोणे त्वथ गुरुकवि-

युग्वाहनस्थानगो वा भाग्याधीशः स्वराशौ भव-  
ति नरपतिर्वाहनव्यूहनाथः ॥ ३१ ॥

अर्थ—इन कहे हुए तथा अग्रे वक्ष्यमाणयोगोंको करने-  
वाला जो ग्रह अधिक बलवान् हो तिसकी दशा अंतर्दक्षामें  
वह फल होगा ऐसा जानना और बृहस्पति शुक्र चौथे घरके  
स्वामीसे युक्त होके केन्द्रमें अथवा ११ में होवे अथवा ८ ।  
५ घरमें होवे तो अथवा बृहस्पति शुक्रसंयुक्त हुआ ९ घरका  
पति चौथे घरमें वा अपने घरमें हो तो वाहनोंके समूहका  
पति राजा हो ॥ ३१ ॥

कर्मस्थे क्षेत्रचिन्ता त्रिकभवनगते सौख्यचिन्ता  
महजि वागीशे यानभ्रूपावसनहयभवा चामरच्छ-  
त्रचिन्ता ॥ प्रालेयांशौ सिते स्यादथ मदनगते  
वाक्पतौ पुत्रचिन्ता संतानस्थानयात्ते हिमकरत-  
नये बुद्धिजाय त्रिकोणे ॥ ३२ ॥ मार्तण्डे तात-  
बन्धोरथ सुतनवमद्यूनगे दानवेज्ये यात्राचिन्ता  
नराणामथ नवमसुते पुत्रजा वासवेज्ये ॥ कर्माधी-  
शो विवीर्या यदि जनुपि तदा सर्वकमस्पदं नो  
गेहे स्वयि यदासौ शुभविगहयुतो मानक्षो मान-  
शलिः ॥ ३३ ॥

अर्थ—दशवें घरमें मंगल हो तो खेतकी चिन्ता रहे त्रिक  
( ६ । ८ । १२ ) घरमें मंगल हो तो सब बातोंके सुखकी

चिंता बनी रहे और ६ । ८ । १२ । घरमें बृहस्पति हो तो वाहन, आभूषण, वस्त्र, घोडा इनकी चिंता बनी रहे चंद्रमा अथवा शुक्र ६ । ८ । १२ घरमें हो तो चंवर छत्र इनकी प्राप्ति रक्षाकी चिंता बनी रहे और जो बृहस्पति सातवें घरमें हो तो पुत्रकी चिंता बनी रहे, ५ घरमें बुध हो तो बुद्धिकी चिंता बनी रहे और ९ । ५ घरमें सूर्य हो तो पिता भाईकी चिंता बनी रहे और ५ । ९ । ७ इन घरोंमें शुक्र हो तो यात्राकी चिंता बनी रहे, जो यदि नववें पांचवें घरमें ( अपनी राशिका होके ) बृहस्पति पडा हो तो मनुष्योंके पुत्रकी चिंता रहे, जो यदि जन्मसमयमें दशवें घरका पति निर्बल होय तो सब कामोंको सिद्ध करनेवाला न होवे अर्थात् जन्मकालमें १० घरका पति बली हो तो वह सब कामोंको सिद्ध करनेवालाही हो, यदि १० घरका पति शुभमे युक्त होके १० घरमें पडे तो वह मनुष्य मानवाला हो ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

टाभे केन्द्रे त्रिकोणे तनुनिधनभवस्थानयाः सं-  
स्थिताश्चेदीर्घायुः पापखेदाः पणफरादिवृकत्रि-  
स्थिता मध्यमायुः ॥ हीनायुः प्रोक्तमेते यदि ज-  
नुपि नृणां स्युस्तदापांङ्क्तिमस्था रन्ध्रस्थानस्थि-  
तानां तनुपनिगगनस्वामिमूर्यात्मज्ञानाम् ॥ ३४ ॥  
यो हीनस्तद्दशायुस्त्वथ निजभवने धर्मकर्मात्म-  
जेशाश्चेत्स्युस्तर्पांद्दशायां बहुलवलयशाल्दर्मघुद्धि-

नैराणाम् ॥ हानिः स्यादन्यथारौ तनुनिधनपती  
भानुपुत्रेण युक्तौ स्यातां स्वभानुना चेतदनु च  
शिखिना तदश्यायां व्रणाः स्युः ॥ ३५ ॥

अर्थ-मनुष्योंके जन्मसमयमें लग्न अष्टम दशम इन घरों-  
के पति ११ और केंद्रमें और ९ । ५ घरमें होंवें तो दीर्घ-  
आयुवाला हो और जो पापग्रह पणफर २ । ८ । ११ इन  
घरोंमें वा ३ । ४ घरमें हो तो मध्यम आयु होवे और ये  
पूर्वोक्त ग्रह ३ । ६ । ९ । १२ इन घरोंमें होवे तो अल्पआयु  
होय तहां ३२ वर्षसे नीचे अल्प आयु, पीछे मध्यमआयु,  
६४ वर्षसे अधिक दीर्घ आयु होती है, आठवें घरमें स्थित  
लग्नेश दशम घरका पति शनि इनमेंसे जो ग्रह हीनबलवाला हो  
तिसकी दशापर्यंत आयु होवे और ९ । १० । ५ इन घरोंके पति  
अपने २ घरोंमें अर्थात् इन्हीं घरोंमें होंवें तो इनमें जो अधिक  
बलवाला होंवें उसकी दशामें मनुष्योंकी धर्ममें बुद्धि होती  
है अन्यथा कहिये अन्य घरोंमें परे हो तो अधिक बलवालेकी  
दशामें धर्मकी हानि हो, लग्न और ८ घरका पति, ये दोनों ग्रह  
शनि राहु केतु इनमेंसे एक किसीसे युक्त होवे और छठे घरमें  
बैठे हों तो इन १ । ८ घरके पति ग्रहमें जो अधिकबलवान् हो  
उसकी दशामें व्रण ( घाव आदि ) होय ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

यानेशस्तत्र संस्थो यदि भवति तदा यानहेतु-  
मृतिः स्याच्चोराच्छेपेण चिन्ता नवमभवनतो

भाग्यजाता विधेया ॥ व्योम्नो भूपालभूपावसन-  
ह्यमहत्कर्षणां प्राप्तिचिन्तालाभस्थानेऽखिलानां  
व्ययनिधनगृहात्कल्मषाणां विधेया ॥ ३६ ॥

अर्थ—जो यदि चौथे घरका पति छठे घरमें हो तो सवारी  
( वाहन ) हेतुसे चोरसे वा शत्रुसे मृत्यु हो ( शनिके योगसे  
वाहनसे, राहुके योगसे चोरसे, केतुके योगसे शस्त्रकरके मृत्यु  
वतानी ) और नवम घरमें भाग्यकी चिन्ता ( शुभाशुभ फल )  
विचारना और दशम घरसे राज्यसंबंधका काम, आभूषण,  
वस्त्र, घोडा इत्यादिक बड़े कामोंका फल विचारना, बारहवें  
घरसे संपूर्ण लाभों ( प्राप्तियों ) की चिन्ता विचारनी, बारहवें  
घरमें मलिन कामोंकी चिन्ता विचारनी, शुभाशुभ ग्रहोंकी दृष्टि  
और इन स्थानोंके स्वामियोंके विचारसे शुभाशुभ फल कहे-  
टीकामें विस्तारपूर्वक अन्य ग्रंथोंका मत लिखा है ॥ ३६ ॥

उग्रस्थे रिःफलाये भवति सुवचनो मानवो रूप-  
वान्वा स्वर्से कार्पण्यबुद्धिर्वहुतपशुमान् आम-  
युतः सदा स्यात् ॥ धर्मे तीर्थावलोक्य बहुलवृ-  
षभनिः क्रूरशुके च पापी मिथ्याज्ञान्तकृत्स्या  
प्रियतनिशमिति ज्ञेयमेवं सुधीभिः ॥ ३७ ॥

अर्थ—बारहवें घरका पति उग्रमें बैठा हो तो वह मनुष्य  
सुन्दरवाला तथा सुन्दररुमान् हो और अपने घरमें ही  
तो कृपाका दान होय अनेक पशुओंवाला तथा मदाधामका

अधिकारी रहे और ८ घरमें हो तो तीर्थयात्रावान् तथा बहुतधर्ममें अत्यंत बुद्धि रखे और जो पापग्रहसे युक्त होके पडा हो तो पापी हो संचितद्रव्यका नाश करे इस प्रकारके योगसे यह फल पंडितजनोंने नियमकरके जानना ॥ ३७ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोषेऽलंकाराख्ये जातके  
मञ्जुलेऽस्मिन् ॥ भावाध्यायः श्रीगणेशेन वर्यै-  
र्वृत्तैर्युक्तः शैलरामैः प्रणीतः ॥ ३८ ॥

इति श्रीजातकालंकारे भावफला-  
ध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

अर्थ—पंडितजनोंको संतुष्ट करनेवाले तथा मनोहरछंदों करके रचे हुए अनिसुंदर इस जातकालंकारविषे श्रीगणेशकविने उत्तम सैंतीस ( ३७ ) श्लोकोंकरके भावाध्याय रचके समाप्त किया है ॥ ३८ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां  
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ योगाध्यायः ।

अहाधीना योगाः सइतज्ञभेगाना जनिवना ततो  
योगाधीनं फलमिति पुराणैः समुद्रितम् ॥ अतो  
वक्ष्ये योगान् सकलगणकावन्दजनकान् शुका-  
स्यादुद्धृतं मतमहाविलोक्येह रुचिरम् ॥ १ ॥



अर्थ—प्राचीन ऋषियोंकरके कहा हुआ फल योगोंके अधीन कहा है और वे योग ग्रहोंके अधीन हैं तथा जन्मनेवालोंके शुभाशुभ फलको कहनेवाले हैं इसलिये श्रीशुकदेवजीके सुखसे निकले हुए सुंदर मतको अच्छी तरह देखके संपूर्ण ज्योतिषियोंके आनंददायक योगोंको कहूंगा ॥ १ ॥

ऋक्षेशः क्षीणवीर्यः सुतनवमगतो मानवो मन्धु-  
मान् वै राशीशे साङ्गनाथे रिपुनिघनगृहे प्रान्त्यगे  
दुर्बलः स्यात् ॥ धर्मद्वेष्याष्टनाथाः खलखचर-  
युताः स्थानके कापि संस्थास्तेर्दृष्टाः स्यात्तदानीं  
परपुरुपरस्ता सुन्दरी तस्य पुंसः ॥ २ ॥

अर्थ—जन्मराशिका पति क्षीणबलवाला हो ५ । ८ स्थानमें पड़ा हो तो जन्मनेवाला नर कोभी होय और जन्मराशिका पति लग्नपतिके संग होके ६ । ९ । १२ इन घरोंमें बैठा हो तो वह नर दुर्बल होवे और ९ । ६ । ८ इन घरोंके पति क्रूरग्रहोंसे युक्त हो अथवा क्रूरग्रहोंकी दृष्टिसे युक्त होके किसी स्थानमें पड़े हों तो उसकी स्त्री जारिणी ( व्यक्तिचारिणी ) होवे ॥ २ ॥

मातृस्थाने स्थितो चेतकुमविधुमदितो पष्टरन्ध्राधि-  
नाथो स्यातां यस्य प्रसूतो भवति खटु नस्त्व-  
न्यज्ञानस्नदानीम् ॥ कापि स्थाने स्थितो स्तः

कलुषस्वगद्युतौ भाग्यरन्ध्राधिनाथौ चेदेवं राहुणा  
वा तदनु च शिखिना संयुतावन्यजातः ॥ ३ ॥

अर्थ—जिसके जन्मसमय छठे आठवें घरके पति मंगल  
और चंद्रमासे युक्त होके चौथे घरमें स्थित होंवें तो  
वह नर अन्यपुरुष ( जारपुरुष )से उत्पन्न हुआ जानना और  
८ । ६ घरके पति पापग्रहोंकरके युक्त तथा राहुकेतुसे युक्त  
होके किसी स्थानमें स्थित होंवें तोभी वह नर पितासे अन्य  
पुरुषसे उत्पन्न हुआ जानना ॥ ३ ॥

युक्तौ मन्देन शूद्रादथ भवति विदा वैश्यतो भा-  
स्करेण क्षत्राज्जातः क्षितेन त्रिदशपगुरुणा भूमिदे-  
वात्प्रसूतः ॥ दैत्येशेज्यौ सपापौ मदनरिपुधन-  
स्थानगौ चेतपरस्त्रीगामी व्योमारिपौ स्तो गगन-  
भवनगौ तात्पिताऽन्यारतः स्यात् ॥ ४ ॥

अर्थ—वह ८ । ६ घरके पति शनिकरके युक्त हों तो  
शूद्रकरके उत्पन्न भया है, बुधसे युक्त हो तो वैश्यसे उत्पन्न  
भया सूर्यसे युक्त हो तो क्षत्रियकरके उत्पन्न भया और  
शुक्रकरके युक्त हो तथा बृहस्पतिसे युक्त हो तो ब्राह्मणसे  
उत्पन्न भया है । इन शुभग्रहोंका योग पापग्रहोंके साथ  
होनेसे अथवा ये नीचके होंवें तब जानना और शुक्र, बृहस्पति  
पापग्रहोंकरके युक्त होके ७ । ६ । २ इन घरोंमें पड़ें तो जन्मने-  
वाला जन परस्त्रीगामी ( जार ) होवे दशमें और छठे घरके

( ३४ ) जातकालंकारः अ० ३ ।

पति १० घरमें स्थित हों तो उसका पिता अन्यस्त्रीके संग रमण करनेवाला जानना ॥ ४ ॥

मूर्तीशः पापयुक्तो धनसदनगतश्चेत्तदा सज्जनस्त्री-  
संयुक्तस्तत्पिता स्याद्ब्रह्मविहगयुताः कामशत्रुस्व-  
नाथाः ॥ कोशस्थास्तद्देवो फलमिति विविधं  
भ्रातृपत्न्योश्च पित्रोः स्थानेशाः कापि भावे तनु-  
पतिसहिताश्चेत्पुमानन्यजातः ॥ ५ ॥

अर्थ—लग्नका पति पापग्रहसे युक्त होके २ घरमें स्थित हो तो उसका पिता उत्तमजनकी स्त्रीके संग रमण करता है और ७ । ६ । २ इन घरोंके पति पापग्रहोंसे युक्त होके दूसरे घरमें स्थित होवे तोभी यह फल जानना इस प्रकारसे अनेक प्रकारके ( दुराचारफल ) जानने और ३ । ७ । ४ । १० इन घरोंके पति लग्नपतिके संग होके किसी घरमें पडे हों तो वह जन अन्य पुरुषसे उत्पन्न हुआ जानना ॥ ५ ॥

लग्नाधीशेन्दुपुत्रौ क्षितितनयनिशानायकौ कापि  
संस्थौ युक्तौ स्वर्भानुना वा भवति हि मनुजः  
केतुना श्वेतकुष्टी ॥ आदित्यो भौमयुक्तस्तदनु  
शानियुतो रक्तकृष्णाख्यकुष्टी साकौ लग्नाधिनाथो  
व्यपरिपुनिधनस्थानगस्तापगण्डः ॥ ६ ॥

अर्थ—लग्नका पति और बुध अथवा मंगल, चंद्रमा, राहु-  
करके अथवा केतुकरके युक्त होके किसी स्थानमें पडे हों तो

जन्मनेवाला नर श्वेतकुश्ली होवे और, मंगलशानिकरके युक्त सूय कही स्थित हो तो रक्तकुश्ली वा कृष्णवर्णका कुशुवाला होय और सूर्यसहित हुआ लग्नका पति १२ । ६ । ८ वे घरमें स्थित होवे तो ताप और गंडमाला रोगसे युक्त होवे ॥ ६ ॥

ज्ञेयश्चन्द्रेण गण्डो जलज इह युतो ग्रन्थिशस्त्रव्रणः  
स्याद्भूमिपुत्रेण पित्तं हिमकरतनयेनाथ ज्विनेन  
रोगः ॥ आमोद्भूतस्ततश्चैद्भूयुतनययुतो नुः क्षया-  
ख्यो गदःस्याच्चोरोद्भूतोऽन्त्यजाद्वा यमशिखितम-  
सामेकयुक् तन्वधीशः ॥ ७ ॥

अर्थ—चंद्रसे युक्त हुआ लग्नपति त्रिक ( ६ । ८ । १२ ) घरमें स्थित हो तो जलसे उत्पन्न हुआ गंडमालारोग होवे, मङ्गलसहित लग्नेश ६ । ८ । १२ घरमें स्थित हो तो ग्रंथि, शस्त्र आदिकका घाव होवे, बुधसे युक्त हुआ लग्नेश ६ । ८ । १२ में हो तो पित्तरोग हो, बृहस्पतिसे युक्त होके स्थित हो तो आमरोग होय, शुक्रकरके युक्त हो तो मनुष्यके क्षयी रोग कहना और शनि, राहु, केतु इनमेंसे एक किसीसे युक्त होके लग्नेश ६ । ८ । १२ घरमें पडे तो चोरसे अथवा नीचजातिसे उत्पन्न हुआ रोग जानना ॥ ७ ॥

चन्द्रो मेपे वृषे वा कुजशानिसहितः श्वेतकुश्ली  
सरोगो दैत्येज्यारेन्दुमन्दास्तिमिभवनगताः कर्क-  
टालिस्थिता वा ॥ अङ्गे सौख्येन हीनः परमक-  
ल्पकृद्भक्तकुश्ली नरः स्याद्वागीशो भार्गवो वा

( ३६ ) जातकालंकारः अ० ३ ।

यादि रिपुगृहपो मूर्तिगः क्रूरखेटैः ॥ ८ ॥ दृष्टश्चे-  
द्वक्रशोफी त्वथ खलसहिता मीनकर्कालिभावा  
लूताकारश्चिरं स्यात्परमगदकरः कुष्ठ एवं नरा-  
णाम् ॥ रिः फस्थानस्थितश्चेद्विबुधपतिगुरुगुंतरोगी  
नितान्तं भूमीमार्तण्डपुत्रौ व्ययभवनगतौ शत्रुगौ  
वा व्रणी स्यात् ॥ ९ ॥

अर्थ—मंगल शनिमे युक्त वा वृष चंद्रमा मेप राशिपर  
स्थित हो तो वह श्वेतकुष्ठी रोगी होय और शुक्र, मंगल, शनि  
ये मीनराशिके अथवा कर्कराशिपर वा वृश्चिकराशिपर स्थित  
होवें तो उसको शरीरका सुख नहीं होवे, महापातकी और  
रक्तकुष्ठी होवे. जो यदि बृहस्पति अथवा शुक्र वा छठे घरका  
पति क्रूर ग्रहोंकरके दृष्ट हो और लग्नमें स्थित होय तो मुखपर  
सोजा ( रसोला आदि ) होवे और मीन, कर्क, वृश्चिक इन  
राशियोंवाले भाव ( कोईभी घर ) क्रूर ग्रहोंसे संयुक्त होवे तो  
लूताकार ( मकड़ीके जालासदृश ) अत्यंत कुष्ठरोग होवे, बृह-  
स्पति वारहवें स्थानमें स्थित होवे तो गुदाका रोगवाला अथवा  
गुप्तरोग जो कि वैद्यकी समझमें न आवे ऐसा रोग निरंतर रहे,  
मंगल सूर्य १२ । ६ घरमें होने तो व्रण ( घाव ) स्फोटक-  
चिह्नसे युक्त हो ॥ ८ ॥ ९ ॥

मेपे मीने कुलीरे तदनु च मकरे वृश्चिके मन्द-  
चन्द्रौ स्यातां क्रूरान्वितौ चैत्रवपभवनगौ मानवः

स्याच्च स्वप्नः ॥ लग्नस्थः पश्यतीन्दुं दिनमाणि-  
तनयं भूमिजो द्यूनदृष्ट्या बुद्ध्या हीनो नरः  
स्याद्दिनविधुविवरे भूमिजश्चेत्तथैव ॥ १० ॥

अर्थ—रुद्रग्रहसे युक्त हुए शनि, चंद्रमा मेष, मीन वृश्चिक  
कर इन राशियोंपर स्थित हों और नववें घरमें पड़े हों  
तब जन्मनेवाला जन लंगडा लूला होवे और लग्नमें स्थित  
हुए चंद्रमाको अथवा शनिको सतम दृष्टिकरके मंगल देखता  
हो तो वह नर बुद्धिहीन होवे और सूर्य चंद्रमाके १०में मंगल  
पडा हो तो भी बुद्धिहीन बताना ॥ १० ॥

प्रालेयांशौ तनुस्थे गगनसदनगे साधिकारेऽर्कसू-  
नौ दृष्टेऽस्मिन्कामदृष्ट्या हिमकिरणभ्रुवा बुद्धि-  
युङ् मानवः स्यात् ॥ पृथ्वीसूनुं मृगाङ्कं तनुनि-  
लयगतं पूर्णदृष्ट्येन्दुसूनुः पश्येच्चैद्बुद्धिहीनस्त्वथ  
शशितनुषौ भ्रुभुवा पीडितो वा ॥ ११ ॥

अर्थ—चंद्रमा लग्नमें स्थित हो और साधिकार अर्थात्  
अपना घर, होरा, द्रेष्काण, नवांशक आदि आधिपत्यस-  
हित हुआ शनि दशवें घरमें होवे और पूर्णदृष्टिकरके बुधसे  
दृष्ट होवे तो वह मनुष्य बुद्धिमान् होवे, जो यदि लग्नमें  
स्थित हुए मंगलको और चन्द्रमाको पूर्ण दृष्टिकरके बुध  
देखता होवे तो वह नर बुद्धिसे हीन हो अथवा चन्द्रमा और  
लग्नका स्वामी ये दोनों मंगलसे पूर्णदृष्टि करके पीडित हों तो  
बुद्धिहीन होवे ॥ ११ ॥

लग्नस्थे रौहिणेये तदनु रविशनी क्रूरदृष्टौरिषुस्था-  
 वेकक्षे चैकभागे भवति गतमतिर्दृष्टिहीनौ शुभा-  
 नाम् ॥ तिग्मांशौ वैरिनाथे खलविहगयुते तुर्यगे  
 सूर्यसूनौ हृद्रोगी वाक्पतौ वा भवति हृदि नरः  
 कृष्णापित्ति सकम्पः ॥ १२ ॥

अर्थ—बुध लग्नमें स्थित होवे और पापग्रहोंसे दृष्ट तथा  
 शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे रहित हुए सूर्य, शनि एक राशिपर स्थित  
 होवें अथवा एक नवांशकपर स्थित हों और संग हुएही छठे  
 घरमें पडे होवें तो वह नर बुद्धिहीन होवे. छठे घरका पति सूर्य  
 पापग्रहमें युक्त होके चौथे घरमें बैठा होय तो हृदयमें  
 रोगवाला होवे. शनि अथवा बृहस्पति छठे घरके पति हों और  
 पापग्रहोंसे युक्त होके चौथे घरमें बैठे होय तो हृदयमें कृष्ण-  
 पित्त रोगवाला हो अथवा दुष्टजनों करके पीडित हुआ हृदयमें  
 कम्परोगवाला होता है ॥ १२ ॥

दृष्टैर्वा पीडितः सन्नथ कुजरविजौ वाक्पतिर्वन्धुसं-  
 स्थो हृद्रोगः स्यान्नराणां त्रण इह नियतं क्लेश-  
 कारी शरीरे ॥ पातालस्थो महीजस्तनयनिल-  
 यगाः सूर्यवित्तसैहिकेया रन्ध्रस्थो भानुपुत्रो यदि  
 जनुपि तदा स्यान्नरो दुःखभागी ॥ १३ ॥

अर्थ—परन्तु जो यदि मंगल, शनि, बृहस्पति ये चौथे  
 घरमें स्थित होवें तो मनुष्योंके इस योग होनेमें हृदयके

रोमके हेतुसे शरीरमें क्लेशकारी वण ( घाव ) हो जाता है मंगल सातवें स्थित हो और सूर्य, बुध, राहु ये पांचवें घरमें स्थित हों, शनि आठवें घरमें हो तो जन्मनेवाला नर दुःख भोगता है ॥ १३ ॥

लग्नं पश्येन्निरक्षे यदि धरणिमुतः संस्थितः का-  
तरः स्याच्छ्रयामूनुर्नभःस्थो यदि निशि जननं  
तद्वदत्रापि वाच्यम् ॥ मूर्तो भूमीतनूजे स्वजनक-  
लहकृत् द्यूनगे स्वाधिकाराद्धिने भौमे वपुष्मान्  
परमयुधि रतस्तीक्ष्णभावश्च नूनम् ॥ १४ ॥

अर्थ—अपने क्षेत्रमें बैठा हुआ मंगल जो यदि लग्नको देखता हो तो जन्मनेवाला नर डरपोक ( भोरु ) होता है यदि शनि दशवें घरमें हो और रात्रिमें जन्म भया हो तोती वह नर डरपोक होता है. लग्नमें मंगल होय तो मित्रस्वज-  
नोंके साथ कलह करनेवाला हो और अपना घर, होरा, द्रेष्काण, नवांश आदिसे रहित होके सातवें घरमें बैठा होय तो दृढशरीरवाला, युद्धमें अत्यंत प्रीति रखनेवाला और तेज-  
स्वभाववाला निश्चयकरके होता है ॥ १४ ॥

पश्येतां कामदृष्ट्या धरणिष्विधुसुतो चेन्मिथः  
स्यात्तदानीमुच्चाकारोऽथ चन्द्रं शनिरविमाहिजा  
श्वेत्प्रपश्यन्ति शीतः ॥ क्षीणे प्रालेयभानौ धर-  
णिजसहिते पापभूमौ सरः स्यान्मूर्तिस्थो द्यूनद-



पृथा हिमकरतनयो वासवेज्यं प्रपश्येत् ॥ १५ ॥  
 हास्यासक्तः सभौमे हिमकरतनये स्याच्छुभर्क्षे  
 कुजज्ञौ मन्दर्क्षौ वार्कट्ट्यौ नरपतिविदुषां रज्जने  
 कोविदः स्यात् ॥ पश्येत्काव्यं सितांशुर्व्ययवि-  
 ल्यारिपुस्थानगो विस्मयालुः क्षिप्रं वाक्स्फूर्तिमान्  
 स्यात् कुजबुधशशिनो वीर्यवत्खेटदृष्टाः ॥ १६ ॥

अर्थ--मंगल, बुध ये आपसमें सातवें भवनकी दृष्टिकरके परस्पर देखते होंगे तो जन्मनेवाला जन उच्च ( ऊंचे ) शरीर-वाला होता है और शनि, सूर्य, मंगल पूर्णदृष्टिकरके चन्द्र-माको देखते होंगे तो जन्मनेवाला जन शीतल हो अर्थात् मूर्ख होता है. यदि क्षीण चन्द्रमा मंगलसहित होके पडा हो तो पाप करनेवाला और तेजस्वत्ताववाला होय. जो यदि लग्नमें स्थित हुआ बुध सातवें घरमें स्थित हुए बृहस्पतिको देखता हो तो जन्मनेवाला जन हास्य ( ठट्टा ) करनेमें आसक्त रहे. जो यदि मंगलसहित हुआ बुध शुभग्रहकी राशिपर स्थित हो अथवा मंगल, बुध ये दोनों शनिकी राशिपर स्थित हों और सूर्यकरके देखे गये हों तो राजाओंके और पंडितोंको प्रमत्त करनेमें चतुर ( निपुण ) होता है और ६ । ८ । १२ इन घरोंमें स्थिर हुआ चंद्रमा शुक्रको देखता होय तो विस्मय ( आश्चर्य ) युक्त रहनेवाला होता है. जो यदि मंगल, बुध, चंद्रमा ये बलिग्रहोंकरके देखे गये हों तो जन्मनेवाला जन

वचन बोलनेकी स्फूर्ति ( शीघ्रता ) वाला होवे ॥ १५ ॥ १६ ॥

शुक्रज्ञौ धूनयातौ गगनविलयगौ मानवः पुंश्वलः  
स्थात् कामाज्ञामन्दिरस्थौ कविधरणिमुतौ तद्व-  
दाज्ञाम्बुयातौ ॥ काव्यारौ तद्वदिन्दोर्नभसि रवि-  
सुतादास्फुजिन्नारयायी तद्वत्कामास्पदस्था बुधसि-  
तज्ञानयः स्वर्गगे भार्गवे हि ॥ १७ ॥

अर्थ—शुक्र, बुध ये ७ । ८ । १० इन घरोंमें बैठे होंवे तो वह नर व्यभिचारी ( जार ) होता है मंगल सातवें दशमें घरमें होवे अथवा ४ । १० इन घरोंमें होवे तो व्यभिचारी ( जार ) पुरुष होता है, जो यदि चंद्रमासे दशमें शुक्र होय, शनिसे चौथे घरमें शुक्र हो तो जन्मनेवाला जन जार ( परस्त्री गामी ) हो, बुध, शुक्र, शनि ये सातवें दशमें घरमें स्थित हों और शुक्र, अपनी राशिपर स्थित हो तोभी तद्वत् अर्थात् पर स्त्रीगामी ( जार ) होता है ॥ १७ ॥

प्रालेयांशात्सिताद्वा दिनमणितनयस्तत्पुरोभाग-  
वर्ती मूर्तौ चेच्चन्द्रशुक्रौ यदि तरणिसुतं पश्यत-  
श्चायशाः स्यात् ॥ शोफच्छेदो नराणामथ तपन-  
सुते भूमिकेन्द्रेऽर्कयुक्ते दृष्टे काव्योडुपाभ्यां यदि  
दिवसपतेश्चोपरागोऽत्र तद्वत् ॥ १८ ॥

अर्थ—चंद्रमासे अथवा शुक्रसे अगली राशिपर ( अगले जावमें ) शनि स्थित हो और चंद्रमा, शुक्र ये दोनों लग्नमें स्थित होके शनिको देखते हों तो जन्मनेवाला नर अपयश-

वाला ( कीर्तिरहित ) होता है. जो यदि शनि लग्नमें स्थित हो और शुक्र चंद्रमाकरके दृष्ट होवे तथा सूर्यका ग्रहण होता हो तो जन्मनेवाला जन लिंगच्छेदयुक्त ( सुजाक आदि रोग-वाला ) होता है और तद्वत् कहिये पूर्वोक्तकी तरह अर्थात् अपयशवालाभी होता है ॥ १८ ॥

याते वक्रग्रहर्क्षं जनुपि भृगुसुते मानवस्तोपदायी  
सीमन्तिन्या रतः स्यान्न खलु मदनगं भार्गवं लग्न-  
नाथः ॥ पश्येत्स्वीयालयस्थो यदि रहसि तदा  
कामिनातोपदाता न स्यादेवं हिमांशुर्दिनकरसुत-  
युक् भौमतः खेसुखे वा ॥ १९ ॥

अर्थ—जो यदि शुक्र क्रूरग्रहकी राशिपर स्थित होवे तो-जन्मनेवाला जन स्त्रीको संभोग ( रमण ) के हेतुसे सुखदायी नहीं होता है और लग्नमें बैठा हुआ लग्नका पति ( पूर्णदृष्टि-करके ) घरमें स्थित हुए शुक्रको देखता हो तो संभोगसमयमें स्त्रीको सुखदाई न हो ऐसा नहीं अर्थात् रमणसमयमें सुखदाई होता है. जो यदि शनिसे युक्त हुआ चंद्रमा मंगलसे चौथे अथवा दशवें घरमें बैठा होय तो ऐसेही उक्त प्रकारसे स्त्रीको सुख देनेवाला होता है ॥ १९ ॥

क्षोणीपुत्रेण युक्तः प्रथमसुरगुरुलग्नतः पष्टपोऽयं  
कामाधिक्यं नराणां जनयाति नियतं पापदृष्टो  
विशेषात् ॥ काव्ये स्वीयालयस्थे तदनु मिथुनगे

कामवान्मानवः स्यान्मूर्तौ सप्ताश्वसूना धनुषि च  
वृषभे चेत्युमानल्पकामः ॥ २० ॥

अर्थ—मंगलसे युक्त हुआ शुक्र लग्नसे छठे घरका पति हो तो मनुष्योंके कामदेवकी प्रबलता करता है, जो यदि वह शुक्र पापग्रहसे देखा गया हो तो विशेषकरके निरंतर कामदेवकी प्रबलता करता है, जो यदि शुक्र अपनी राशिपर स्थित हो अथवा मिथुनराशिपर स्थित हो तो मनुष्य कामदेवसे युक्त होता है, जो यदि लग्नमें शनि हो धनराशिका अथवा मकरराशिका होवे तो मनुष्य स्वल्प काम देनेवाला होता है ॥ २० ॥

मन्दे नक्षत्रेऽल्पभाषी त्वथ रिपुगृहपे वा सुधांशा-  
वदृश्ये चेदर्धे संस्थिते ऽङ्गो भवति जनिमतां ने-  
त्रयोः क्रूरयुक्ते ॥ पश्येत्क्षीणं चन्द्रं यदि भृगु-  
तनयः सूर्यजः पश्यतीन्दुं स्वक्षे चन्द्रे नभःस्थै-  
र्यादि मदनगतैर्वाक्ष्यते पापखेटैः ॥ २१ ॥

अर्थ—मकरराशिका शनि होवे तो अल्प बोलनेवाला हो-  
ता है, जो यदि छठे घरका पति अथवा चंद्रमा क्रूरग्रहसे युक्त  
होके ( अदृश्याद् ) सप्तमभावके जोग्यांशसे लेके ८ । ९ ।  
१० । ११ । १२ । लग्नका भुक्तंश इतनी जगहमें कहीं हो  
तो जन्मनेवालेके नेत्रोंमें कोई चिह्न हो, यदि क्षीणचंद्रमाको  
शुक्र नहीं देखता हो तब शनि देखता हो अथवा कर्कराशिपर

चंद्रमा स्थित होवे तब दशवें अथवा ७ घरमें स्थित हुए प  
पत्रहोंकरके वह चंद्रमा देखा जाता हो तो ॥ २१ ॥

स्यान्नं चालपनेत्रस्तदनु तनुगतं भूमिजं वा क्ष-  
पेशं पश्येद्वाचस्पतिश्चेदसुरकुलगुरुः काणदृष्ट-  
मानवः स्यात् ॥ विच्छायातिग्मभानोः क्षिति  
भुवि च पुरो भागगे दृङ्गराणां सौम्ये चिह्नं दृशि  
स्यादथ वपुषि लये भार्गवे क्रूरदृष्टे ॥ २२ ॥

अर्थ—वह नर छोटे नेत्रोंवाला होता है. जो यदि इस यो-  
गके पीछे लग्नमें स्थित हुए मंगलको अथवा चंद्रमाको बृहस्पति  
अथवा शुक्र देखता हो तो वह नर काणा होता है. जो यदि  
सूर्यसे अगली राशिपर प्राप्त हुआ मंगल हो तो मनुष्योंकी  
दृष्टि कांतिरहित होती है, और सूर्यसे अगली राशिपर  
बुध होवे तो नेत्रमें चिह्न होय. जो यदि लग्नमें आठवें घरमें  
शुक्र हो पापग्रहसे देखा जाता हो तो ॥ २२ ॥

नेत्रे पट्टाश्रुपातात्तदनु शशिकुजावेकभावे यदा-  
क्ष्णोश्चिह्नं किंचित्तदानीं ग्रहत्रयवशतो दृश्यमेवं  
सुधीभिः ॥ मार्तण्डे सिःफयाते तदनु नवमगे पु-  
त्रगे वा खलाढ्ये दृष्टे वा स्यान्मनस्वी सुधिकल-  
नयनः सूर्यजे व्याधियुक्तः ॥ २३ ॥

अर्थ—उस पुरुषके आंशु गिरनेके हेतुमें नेत्रमें पीटा होती  
है. जो यदि चंद्रमा और मंगल एक नवांशकपर स्थित होवे  
नेत्रोंमें कुछ चिह्न होवे पंडितजनोंने योगकारक ग्रहोंके

बलके विचारसे यह सब हाल कहना. जो यदि क्रूरग्रहोंसे दृष्ट अथवा क्रूरग्रहोंकरके संयुक्त हुआ सूर्य १२ । ९ । ५ इन घरोंमें पडा हो तो वह नर बुरे ( खराब ) नेत्रोंवाला हो अथवा १२ । ९ । ५ इनही घरोंमें पापग्रहोंसे दृष्ट अथवा युक्त होके शनि पडा हो तो वह नर रोगी होवे ॥ २३ ॥

चन्द्रं पृष्ठोदयस्थं द्विवृकगृहगतः सूर्यसूनुः प्रप-  
श्येदित्थं लग्नाधिनाथे क्रियभवनगते मानवा  
वामनः स्यात् ॥ कोशे पीयूषभानुर्जलचरगृहगः  
सौरिणा संयुतो वा मार्तण्डे भूमिकेन्द्रे यदि भवति  
तदा ददुमान्पुरुषः स्यात् ॥ २४ ॥

अर्थ—पृष्ठोदय ( १ । २ । ४ । ९ । १० इन राशियों )  
पर स्थित हुए चंद्रमाको चौथे घरमें बैठा हुआ शनि देखता  
हो और इसी योगसमयमें लग्नका स्वामी मेषराशिपर स्थित  
हो तो वह नर वामन हो. जलचर राशिपर स्थित हुआ चंद्रमा  
दूसरे घरमें स्थित हो अथवा शनिसे युक्त हो अथवा सूर्य  
लग्नमें हो तो वह नर ददु ( दाद ) रोगवाला होता है ॥ २४ ॥

दृष्टे क्रूरैर्न सौम्यैर्यदि रिपुगृहपे चोडुपे प्रह्वान्  
स्यादेवं कामाङ्गनाथे तदनु रविसुतस्त्वयंगो नष्ट-  
दाष्टिः ॥ प्रीही स्याल्लग्ननाथे दिनकरतनये क्रूरानि-  
ष्पाडिते चैत्सौख्यायुद्धमानवः स्यात्तद्वृत्तु सद्वनगते  
प्रह्वान् हर्षहीनः ॥ २५ ॥

अर्थ—जो यदि शत्रुघ्न ( छठे घर ) का पति हुआ चंद्रमा पापग्रहोंकरके दृष्ट हो और सौम्यग्रहोंकी दृष्टि नहीं होवे तो ष्टीहा ( तापतिष्ठी ) रोगवान् हो इसी प्रकार सातवें घरका पति अथवा लग्नका पति चंद्रमा केवल पाप ग्रहोंकरकेही देखा गया हो तोभी ष्टीहारोगवाला हो और पापग्रहोंकरके दृष्ट हुआ शनि चौथे घरमें बैठा हो तो अंधा होवे और दृष्टि अथवा योगकरके क्रूरग्रहोंसे विकल हुआ शनि लग्नका पति होवे तो वह नर सुखरहित हो और शनि लग्नमें पडा हो तो वह नर ष्टीहा ( तापतिष्ठी ) रोगवान् और आनंदरहित हो ॥ २५ ॥

क्रूराः केन्द्रालयस्था वपुषि च विकलाः केन्द्रगौ  
पुष्पवन्तौ किंवा लग्ने प्रपश्येत्कविमिनतनयः  
श्रोणिभागेऽङ्गहीनः ॥ काव्यः पातालयायी सुर-  
पतिगुरुणा कापि युक्तोऽर्कसूनुर्भोमो वा रौहि-  
णेयो भवति हि विकलः श्रोणिभागे भुजेऽग्नौ ॥ २६ ॥

अर्थ—जो यदि क्रूरग्रह केन्द्रमें स्थित हो तो जन्मनेवाला नर विकल शरीरवाला होता है जो यदि सूर्य चंद्रमा (एकत्रही) केन्द्रमें पडे हों तोभी विकल शरीरवाला हो अथवा लग्नमें स्थित हुए शुक्रको शनि देखता हो तो कदिजागपर अंगहीन हो. शुक्र चौथे घरमें बैठा हो और बृहस्पतिकरके युक्त हुआ शनि, मंगल अथवा बुध जहां कहीं ( किसी घरमेंती ) स्थित हो तो

कटीकी जगह हाथ वा पैरकी जगह विकल ( अंगहीन )  
होता है ॥ २६ ॥

आयुःपुण्याधिनाथौ यदि खल्वखचराक्षर्यगौ पाप-  
युक्तौ जङ्घावैकल्यवान् स्यात् कुजशनिसहिते  
सैहिकेये च सूर्ये ॥ द्वेष्यस्थे तद्देवं शनिरिपुगृ-  
हपो रिःफयातौ खल्वैश्वेष्टौ तद्दत्तदानौ रविविधु-  
रविजा वैरिरन्ध्रालयस्थाः ॥ २७ ॥ स्यादार्तिः  
पञ्चशाखे तदनु दशमगे सूर्यसूनौ सिताढ्ये कृविः  
स्यात्सूर्यसूनौ व्ययरिपुगृहगे शुक्रतःकृविरूपः ॥  
पश्येत्सूर्यालयस्थो मदनभवनगं भूमिसूनुं सुधां-  
शुश्वार्कः काणश्च कर्कं यौदि शुभगृहपो मेपासि-  
हालिनके ॥ २८ ॥

अर्थ—आठवें और नववें घरके पति पापग्रहोंसेही चौथे  
घरमें बैठे हों और पापग्रहोंसे युक्त होवे तो जाँव नहीं हों  
अर्थात् पांगला हो. जो यदि मंगल और शनिसे युक्त हुआ  
राहु छठे घरमें बैठा हो अथवा शनि मंगलसे युक्त हुआ सूर्य  
छठे घरमें बैठा हो तो तिसी प्रकार पांगला होता है,  
शनि और छठे घरका पति क्रमग्रहोंसे देखे गये हों और १२  
घरमें स्थित होवे तौभी पांगला होता है. जो यदि सूर्य, चंद्रमा,  
शनि ६ । ८ वें घरमें स्थित हों तो जन्मनेवालेके हाथमें  
पीडा होती है. जो यदि शुक्रसे युक्त हुआ शनि दशवें घरमें



बैठा हो तो नपुंसक होता है और शुक्र बैठे हो उस राशिसे १२ । ६ घरमें शनि स्थित होवे तो नपुंसकसरीखा रूपवाला होता है जो यदि सिंहराशिपर स्थित हुआ चंद्रमा सातवें घरमें बैठे हुए मंगलको देखता हो तो काणा होता है और कर्कराशिपर स्थित हुआ सूर्य सातवें घरमें स्थित हुए मंगलको देखता हो तोभी काणा होता है. जो यदि नववें घरका पति मेष, सिंह, वृश्चिक, मकर इन राशियोंपर स्थित हो तब यह योग पूर्ण जानना ॥ २७ ॥ २८ ॥

अन्योऽन्यं पश्यतश्चेत्तरणिहिमकरौ तत्तनूजौ  
मिथो वा भूसूनुः पश्यतीनं समभवनगतं त्वङ्गच-  
न्द्रौ यदौजे ॥ ओजर्क्षं युग्मराशौ हिमकरशशिजौ  
भूसुतेनेक्षितौ चेतपुराशौ लग्नशुक्रौ तदनु हिम-  
करः क्लीबयोगाः पडेते ॥ २९ ॥

अर्थ—विपमराशि और समराशिपर स्थित हुए सूर्य, चंद्रमा आपसमें देखते हैं अर्थात् विपमराशिका सूर्य समराशिके चंद्रमाको और वह चंद्रमा सूर्यको देखता हो यह एक योग और इनके पुत्र अर्थात् शनि, बुध येभी विपमराशिपर इसी प्रकारसे स्थित हुए आपसमें देखते हैं यह दूसरा योग. समराशिके सूर्यको विपमराशिगत मंगल देखता हो, मंगलको सूर्य देखता हो यह तीसरा योग. विपमराशिके लग्न और चंद्रमा समराशिगत मंगलकरके दृष्ट यह चौथा योग. चंद्रमा, बुध ये

क्रमकरके विषम सम राशिपर हों और मंगलकरके देखे जाते हों यह पांचवां योग और लग्न, शुक्र, चंद्रमा, ये पुरुषग्रहकी राशिपर तथा नवांशकमें स्थित हों यह छठा योग. ऐसे छः योग नपुंसक करनेवाले हैं ॥ २९ ॥

आयुःस्यानोपयाते धराणिसुतयुते भार्गवे वातको-  
पात्काव्ये भौमेन युक्ते कुजभवनगते भूमिजा सु-  
ष्कवृद्धिः ॥ भौमर्क्षे काव्यचन्द्रौ सुरपतिगुरुणा  
सूर्यजेनाथ दृष्टौ नूनं स्यान्मानवानां जनुपि कल-  
लजा सुष्कवृद्धिर्नितान्तम् ॥ ३० ॥

अर्थ—मंगलसे युक्त हुआ शुक्र आठवें घरमें हो तो वात-  
कोपसे वृषणवृद्धि ( वृषण बढ जावे ) हो. मंगलसे युक्त हुआ  
शुक्र मंगलकी राशिपर स्थित होवे तो पृथ्वीके संसर्गसे वात-  
कोपसे वृषण बढ जाते हैं. जिन मनुष्योंके जन्मसमयमें मंगल-  
की राशिपर स्थित हुए शुक्र, चंद्रमा, बृहस्पति शनिसे देखे  
गये हों तो तिनके शुक्रशोणित ( रक्तकलिल ) से अत्यंत वृषण  
बढते हैं ॥ ३० ॥

क्रूरदृष्टे विलग्रे सुविकृतरदनश्चापगौ मेपसंज्ञे  
खल्व्वाटः पापलग्रे धनुपि गावि तथा लोफिते  
क्रूरखेटैः ॥ धर्मार्थान्त्यात्मजस्था यदि खलखचरा  
बन्धभाक् पूरुपः स्यादेवं लग्रे क्रिये वा धनुपि  
गावि तथा राक्षमजं बन्धनं नुः ॥ ३१ ॥

अर्थ—धन, वृष, मेष इन राशियोंका लग्न पापग्रहों करके देखा गया हो तो दांतोंमें रोग होता है. पापग्रहोंसे युक्त हुआ लग्न धन तथा वृषराशिका हो पूर्वोक्त प्रकारसे पापग्रहोंकरके देखाभी जाता हो तो जन्मनेवाला जन गंजा होता है और १।२।१२। ५ इन घरोंमें पापग्रह होंवें तो बंध (कैद आदि) में बंधनेवाला हो इसी प्रकार मेष, धन, वृष ये लग्न क्रूरग्रहोंसे युक्त हों तो मनुष्यके रस्ती आदिसे बंधन होता है ॥ ३१ ॥

दुर्गन्धिर्दानवेज्ये शनिभवनगते मानवो विग्रहे  
स्याद्वेष्याधीशे बुधर्क्षे तदनु मकरगे तद्वदत्राय  
काव्ये ॥ केन्द्रस्थे तेन युक्स्यादथ कविराविजौ  
स्वीयहृदायुतौ चेतद्वचंद्रेऽजयाते तनुसदनगते  
चानने स्याद्विगन्धः ॥ ३२ ॥

अर्थ—शनिकी राशिपर शुक हो तो जन्मनेवाले मनुष्यके शरीरपर दुर्गन्धि होती है. छठे घरका पाति ३ । ६ । १० इन राशियोंपर हो तोभी शरीरमें दुर्गन्धिवाला हो. जो यदि बुधकी राशिपर स्थित हुआ शुक बुधसे युक्त होके केन्द्रस्थानमें पडा हो तो शरीरमें दुर्गन्धि होती है और शुक, शनि अपने त्रिशांशमें प्राप्त होंवें तोभी शरीरमें दुर्गन्धिवाला होता है और मेषराशिका चंद्रमा लग्नमें पडा हो तो मुखमें दुर्गन्ध होती है ॥ ३२ ॥

एवं ब्रह्मणां सदसत्फलानां योगाद् ब्रह्मैरनुयोज-  
नीयम् ॥ शुभाशुभं जन्मनि मानवानां फलं  
सुमत्या प्रविचार्य नूनम् ॥ ३३ ॥

अर्थ—यहोको जाननेवाले पांडितोने शुभाशुभफलदायी  
 यहोके योगसे इस प्रकारसे योजना करनी, मनुष्योंके जन्म-  
 समयमें शुभाशुभ फल अपनी बुद्धिसे विचारके निश्चयसे कहना  
 चाहिये ॥ ३३ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोषेऽलंकाराख्ये जातके  
 मञ्जुलेऽस्मिन् ॥ योगाध्यायः श्रीगणेशेन वर्षैर्बु-  
 तैर्युक्तो रामरामैः प्रणीतः ॥ ३४ ॥

इति जातकालंकारे योगाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

अर्थ—मनोहर छंदकरके रचे हुए पांडितोको प्रसन्न करने-  
 वाले, मनोहर इस जातकालंकारविषे श्रीगणेशकविने उत्तम  
 वेंतीस श्लोकोंकरके यह योगाध्याय समाप्त किया ॥ ३४ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां  
 योगाध्यायस्तृतीयः ॥

अथ विषकन्याध्यायः ४ ।

भोजङ्गे कृत्तिकायां शतभिषजि तथा सूर्यमन्दार-  
 वारे भद्रासंज्ञे तिथौ या किल जननामियात्सा  
 कुमारी विपाख्या ॥ लग्नस्थौ सौम्यखेटावशुभ-  
 गगनगञ्चैक आस्ते ततो द्वौ वैरिक्षेत्रानुयातो  
 यदि जनुपि तदा सा कुमारी विपाख्या ॥ १ ॥

अर्थ--आश्लेषा, कृत्तिका, शतभिषा इन नक्षत्रोंमें सूर्य, शनि, मंगलवार और भद्रासंज्ञक तिथियोंमें कन्या जन्मे तो वह विपकन्या होती है अर्थात् रविवार द्वितीया १ योग, आश्लेषा, कृत्तिका, शनिवार सप्तमी २ योग, शतभिषा मंगलवार द्वादशी यह तीसरा योग है. इनमें जन्मनेवाली विपकन्या होवे और दो शुभग्रह लग्नमें स्थित हों एक पापग्रह दशवें घरमें स्थित हो दो पापग्रह छठे घरमें हों तब जन्मनेवाली वह लडकी विपकन्या कहलाती है ॥ १ ॥

मन्दाश्लेषाद्वितीया यदि तदनु कुजे सप्तमी वारुणक्षे द्वादश्यां च द्विदैवं दिनमणिदिवसे यज्जनिः सा विपाख्या ॥ धर्मस्थो भूमिसनुस्तनुसदनगतः सूर्यसूनुस्तदानीं मातैण्डः सूनुयातो यदि जनिसमये सा कुमारी विपाख्या ॥ २ ॥

अर्थ--शनिवारको आश्लेषा नक्षत्र द्वितीया तिथि हो, मंगलको सप्तमी शतभिषा नक्षत्र द्वादशी तिथि हो इन तीन योगोंमें जिसका जन्म हो वह विपकन्या कहलाती है. नववें घरमें मंगल हो, शनि लग्नमें हो, सूर्य पांचवें घरमें हो तब जन्मनेवाली विपकन्या होती है ॥ २ ॥

लग्नादिदोः शुभो वा यदि मदनपतिर्धूनयायी विपाख्या दोषं चैवानपत्यं तदनु च नियतं हन्ति वैष्व्यदोषम् ॥ इत्थं क्षेपं श्रेष्ठैः सुमतिभिरसिद्धं

योगजातं, ग्रहाणामौश्यायांनुमत्या मतमिह गदितं  
जातके जातकानाम् ॥ ३ ॥

अर्थ—जो यदि सातवें घरका पाति अथवा शुभग्रह लग्नसे वा  
चंद्रमासे सातवें घरमें बैठा हो तो विपकन्याका दोष तिससे  
होनेवाला संतानहीन फल और वैधव्यदोष दूर होता है ऐसे  
इस उक्त प्रकारसे इस जातकालंकारमें दैवज्ञ सत्यजनोंके  
अनुमत करके जातकोंके संपूर्ण योग कहे हैं सो उत्तम बुद्धि-  
वाले दैवज्ञजनोंने इसी प्रकारसे जानने अर्थात् ये संपूर्ण योग  
इसी प्रकारसे बताने चाहिये ॥ ३ ॥

हृद्यैः पथैर्युम्फिते सूरितोपेऽलंकाराख्ये जातके  
मञ्जुलेऽस्मिन् ॥ कन्याध्यायः श्रीगणेशेन वर्यै-  
वृत्तैर्युक्तो वह्निसंख्यैर्विपाख्यः ॥ ४ ॥

इति श्रीजातकालंकारे विपकन्याध्यायश्चतुर्थः ॥४॥

अर्थ—मनोहर छंदोंकरके रचे हुए पंडितजनोंको संतुष्ट  
करनेवाले मनोहर इस जातकालंकारविषे उत्तम तीन श्लोकों-  
करके श्रीगणेशकविने विपकन्या अध्याय कहाहै ॥ ४ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां विपकन्या-  
ध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

## अथायुर्दायाध्यायः ५ ।

आयुर्मूलं जन्मिनां जीवनं च ह्याजीवानां निर्ज-  
राणां सुधेव ॥ एवं प्राहुः पूर्वमाचार्यवर्यास्तस्मा-  
दायुर्दायमेनं प्रवक्ष्ये ॥ १ ॥

अर्थ--जन्मनेवालोंके जीवनेका मूल आयु है जैसे देवता-  
ओंको अमृत है तैसे आयु है इन प्रकारसे पहलेके आचार्योंने  
कहा है इसीवास्ने इस आयुर्दाय अध्यायको कहूंगा ॥ १ ॥

लग्नाधीशातिवीर्यो यदि शुभविहगैरक्षितः केन्द्र-  
यातेदंदादायुः सुदीर्घं गुणगणसहितं श्रियुतं  
मानवानाम् ॥ साम्याःकेन्द्रालयस्था जनुपि च  
रंजनेनापके स्वीयनुद्गे वीर्यान्व्ये लक्ष्मनाथे नपुपि  
च शरदां पष्टिरायुर्नराणाम् ॥ २ ॥

स्वयितुङ्गे सुरेज्ये लग्नाधीशोऽतिवीर्ये गगनवसुस-  
मातुल्यमायुर्नराणाम् ॥ ३ ॥

अर्थ—सौम्य ग्रह केंद्र ( १ । ४ । ७ । १० ) में स्थित  
हों और बृहस्पति लग्नमें ही हो और ये सब दशवें घरमें स्थित  
हुए क्रूरग्रहोंकरके दृष्ट नहीं हो तो सत्तर वर्षकी आयु हो और  
शुभग्रह लग्नमें तथा नववें पांचवें घरमें स्थित हों तब तथा बृह-  
स्पति उच्चका हो और लग्नपति अति बलिष्ठ होवे तो  
मनुष्योंकी अस्ती वर्षकी अवस्था होवे ॥ ३ ॥

सौम्ये केन्द्रेऽतिदीर्घे यदि निधनपदं खेटहीनं वीर्यं  
समाः स्युस्त्रिंशत्सौम्योक्षितं चेद्गगनहिमकरैः संयु-  
ताथो स्वभे चेत ॥ स्वत्र्यंशे चामरेज्ये मुनिनय-  
नमितं स्वर्क्षगो लग्नगो वा चन्द्रे द्यूने शुभश्चेद्गग-  
नरसमितं कोणगाः सौम्यत्वेतः ॥ ४ ॥

अर्थ—बुध केन्द्रस्यानमें पडा हो, अत्यंत बलिष्ठ हो और  
आठवें घरमें कोई ग्रह न हो तो तीस वर्षकी आयु होती है-  
जो यदि वह आठवां घर शुभग्रहोंकरके देखा जाता हो तो  
चालीस वर्षकी अवस्था हो और बृहस्पति अपनी राशिपर  
अपने द्रेष्काणपर हो तो सत्ताइस वर्षकी अवस्था हो. चंद्रमा  
अपनी राशिका हो अथवा लग्नमें पडा हो और नानवें घरमें  
शुभ ग्रह बैठा हो तो साठ वर्षकी अवस्था होवे ॥ ४ ॥

क्रीटे लग्ने सुरेज्ये यदि भवति तदा स्वाष्टतुल्यं  
ल्येशो धर्मेऽङ्गे चाङ्गनाथे निधनभयनगे क्रूरदृष्टेऽ



विहस्ताः ॥ लग्नाधीशाष्टनाथौ लयभवनगतौ  
सप्तविंशद्विलम्बे क्रूरज्यौ चन्द्रदृष्टौ यदि निधनगतः  
वत्थनास्ते द्विपक्षाः ॥ ५ ॥

अर्थ—जो यदि शुभ ग्रह ९ । ५ घरमें हो और कर्क  
लग्नपर बृहस्पति होवे तो अस्सी वर्षकी अवस्था होती है,  
आठवें घरका पति नववें घरमें हो और लग्नपति क्रूरग्रहसे  
दृष्ट होके आठवें घरमें बैठा हो तो चौबीस वर्षकी अवस्था  
होवे और लग्नका पति तथा अष्टम घरका पति आठवें घरमें  
होवे तो सत्ताईस वर्षकी अवस्था हो, जो यदि पापग्रहसे  
युक्त हुआ बृहस्पति लग्नमें स्थित हो और चंद्रमाकरके दृष्ट  
हो, आठवें घरमें अन्य कोई ग्रह बैठा होवे तो बाईस वर्षकी  
अवस्था होती है ॥ ५ ॥

लग्नेन्दु क्रूरहीनौ वपुषि सुरगुरौ रन्ध्रं खेटहीनं  
केन्द्रे सौम्ये स्वशैलाः सितविद्युधगुरूस्याच्छतं  
केन्द्रगौ चेत् ॥ वागीशे कर्कलग्ने शतामिह भृगुजे  
केन्द्रगेऽथार्कसूनुौ घर्मागस्थे सुधांशौ व्ययनवम-  
गते दायनानां शतं स्यात् ॥ ६ ॥

अर्थ—लग्न और चन्द्र ऋग्रहोंसे रहित और लग्नमें  
बृहस्पति होवे, आठवें घरमें कोई ग्रह नहीं हो, केन्द्रमें शुभ ग्रह  
होये तो सत्तर वर्षकी अवस्था हो, जो यदि शुक्र, बृहस्पति  
केन्द्रमें पडे हो तो सौ वर्षकी अवस्था हो, जो यदि बृहस्पति

का हो और शुक्र केंद्रमें पडा हो तो सौ वर्षकी अवस्था  
 । है और शनि नववें घरमें हो अथवा लग्नमें हो, चंद्रमा  
 हवें अथवा नववें घरमें हो तो सौ वर्षकी आयु होवे ये सव  
 ण यश संपत्तिकेभी सूचक जानते ॥ ६ ॥

धीकेन्द्रायुर्नवस्था यदि खलखचरा नो गुरोर्में  
 विलम्बे केन्द्रे काव्ये गुरौ वा शुभमपि निघ्नं  
 सौम्यदृष्टं शत स्यात् ॥ लग्नादिन्दोर्न खेदा यदि  
 निघ्नगता वीर्यभाजौ सितेज्यौ पूर्णायुः स्वीय-  
 राशौ शुभगगनचराः पष्टिरङ्गोच्चोऽञ्जे ॥ ७ ॥

अर्थ—शुक्र ग्रह ५ । १ । ४ । ७ । १० । ८ । ९ इन  
 घरोंमें नहीं होवे और धन मीन राशिपर तथा लग्नमें वा केंद्रमें  
 शुक्र अथवा बृहस्पति होवे और नववां आठवां घर शुभग्रहसे  
 देखा जाना हो तो सौ वर्षकी अवस्था होनी है, जो यदि  
 लग्नसे अथवा चंद्रमासे आठवें घरमें कोई ग्रह नहीं होवे और  
 शुक्र, बृहस्पति बलवंत होंवें तो पूर्ण आयु ( १२० वर्षकी )  
 होवे, जो यदि शुभ ग्रह अगनी राशिपर होवे और लग्नमें तथा  
 वृषका चंद्रमा होवे तो साठ वर्षकी अवस्था होनी है ॥ ७ ॥

कोट्टण्डान्त्यार्धमङ्गं यदि सकलखगाः स्वोच्चमा  
 ज्ञे जिनाशौस्ये पूर्णं च केन्द्रे सुरपतिभृगुबौ  
 लग्नोऽञ्जे परायुः ॥ शुक्रे मीने तत्रस्ये निघ्न-  
 गृहमते सौम्यदृष्टे सुधांशौ जीवे केन्द्रे शतं स्या-

द्वय तनुग्रहपे छिद्रगे पुष्करेऽब्जे ॥ ८ ॥ वागीशे  
 वीर्ययुक्ते नवमभवनगाः सर्वखेटाः शतायुः कर्केऽङ्गे  
 जीवचन्द्रौ सहजरिपुभवे सत्कविज्ञौ च केन्द्रे ॥  
 केन्द्रे सूर्यारमन्दा गुरुनवलवगा वाक्पतौ लग्न-  
 याते व्यष्टस्थानेषु शेषाः शरगजतुलितं स्यान्न-  
 राणां तदायुः ॥ ९ ॥

अर्थ—यसु राशिका पिछला अर्द्धभाग लग्न हो तहां सब उच्चके होंवें और बुध चौबीस अंशोंसे वृषका होवे तब पूर्ण आयु (१२० वर्षकी) होती है. जो यदि शुक्र बृहस्पति केंद्रमें स्थित हों और चन्द्रमा ग्यारहवें घरमें होवे तो परम आयु होती है. मीन राशिका शुक्र लग्नमें हो और सौम्य ग्रहों-करके देखा हुआ चंद्रमा आठवें घरमें हो, बृहस्पति केंद्रमें हो तो सौ वर्षकी आयु होती है और लग्नका पति आठवें घरमें हो, चन्द्रमा दशवें घरमें हो, बृहस्पति चलवान् हो, अन्य सब ग्रह नववें घरमें होंवे तो सौ वर्षकी अवस्था होती है. कर्क लग्न हो, बृहस्पति और चन्द्रमा ३ । ६ । ११ इन घरोंमें हों और शुभग्रहोंसे युक्त हुए शुक्र, बुध केंद्रस्थानमें होंवें तोभी सौ वर्षकी आयु होती है. सूर्य, मंगल, शनि ये बृहस्पतिके नवांशकमें स्थित होके केंद्रमें बैठे होंवें और बृहस्पति लग्नमें स्थित होवे. अन्य सब ग्रह अष्टम स्थानमें नहीं होवे तो मनुष्योंकी अवस्था पचासी वर्षकी होती है ॥ ८ ॥ ९ ॥

ऋराः सौम्यांशयाता उपचयगृहगाः कातराः क-  
 ण्टकस्थाःसौम्या व्योमार्कसंख्या यदि तनुपकुजौ  
 रन्ध्रगौ नो परायुः ॥ केन्द्रे लग्नेशजीवौ नवसुत-  
 निधने कण्टके नो खलाख्याः संपूर्णं पापखेदा  
 यदि गुरुजलगा जीवभात्रे च सौम्याः ॥ १० ॥  
 युग्मक्षीं गता वा व्ययधनगृहगाश्चेच्छुभाः शीत-  
 भानुः संपूर्णा लग्नयायी शतमिह जनिनामि-  
 न्दिरामन्दिरं स्यात् ॥ लग्नेशे सौम्ययुक्ते वपुषि  
 च लयपे रन्ध्रगे नान्यदृष्टे विंशत्केन्द्रे लयेशे बल  
 वियुजि तथा लग्नपे त्रिंशदायुः ॥ ११ ॥

अर्थ—पापग्रह शुभग्रहोंके नवांशकमें स्थित होके ३ । ६ ।  
 १० । ११ इन घरोंमें पडे हों तो दरपोक ( बुद्धमें जागने  
 वाले ) नर होते हैं, जो यदि शुभग्रह केंद्रस्थानमें पडे हों तो  
 एक सौ बीस वर्षकी परम आयु होती है परन्तु इस परम  
 आयुयोगमें शनि, मंगल आठवें घरमें होवे तो परम आयु  
 नहीं होती है, लग्नपति और बृहस्पति केंद्रमें हों और ९ । ५ ।  
 ८ इन घरोंमें तथा केंद्रमें पापग्रह नहीं होवे तो पूर्ण आयु  
 होती है, जो यदि पापग्रह नववें चौथे घरमें हो और शुभग्रह  
 बृहस्पतिके नवांशकमें हो अथवा समराशिके नवांशकमें स्थित  
 होवे और शुभ ग्रह १२ । २ घरमें हो पूर्ण चंद्रमा लग्नमें  
 स्थित हो तो संपत्ति लक्ष्मीसहित हुआ जन सौ वर्षतक जीवता

है, जो यदि शुभग्रहोंसे युक्तहुआ लग्नपति लग्नमें बैठा हो, अन्यग्रहों करके देखा नहीं जाता हो और अष्टम घरका पति आठवेंही पडा हो तो बीस वर्षकी अवस्थायाला होता है और बलहीन हुए लग्नपति तथा अष्टम घरके पति केंद्रमें पडे हों तो बीस वर्षकी अवस्था होती है ॥ १० ॥ ११ ॥

इन्द्रावापोक्लिमस्थे तदनु तनुपतौ निर्वले पापद-  
ष्टे दन्तैस्तुल्यं ततोऽर्कः खलखगविवरे लग्नगोऽ-  
ब्जत्रिसंख्यम् ॥ रिःफे केन्द्रे सुरेज्ये गुरुरिपुस-  
हजे स्यात्सपापेऽङ्गनाथे रामाब्दं कर्कलग्ने कुम्-  
तुहिनकरौ केन्द्ररन्ध्रं ग्रहोनम् ॥ १२ ॥

अर्थ--चंद्रमा आपोक्लिम ( ३ । ६ । ९ । १२ ) इन घरोंमें बैठा हो और लग्नपतिजी ३ । ६ । ९ । १२ इनही घरोंमें हो, ये दोनों निर्वल हों तथा पापग्रहोंकरके दृष्ट होंवे तो बीस वर्षकी आयु हो, जो यदि क्रूरग्रहोंके मध्यमें आया हुआ सूर्य लग्नमें बैठा होवे तो इकतीस वर्षकी आयु होती है बृहस्पति केंद्रमेंही अथवा चारहवें घरमें हो और लग्नका पति पापग्रहसे युक्त होके ९ । ६ । ३ इन घरोंमें बैठा होवे तो तीन वर्षकी अवस्था होती है, कर्कलग्न हो चन्द्रमा मंगल केन्द्र ( १ । ४ । ७ । १० ) स्थानमें हो और ८ घरमें कोई ग्रह नहीं हो तोभी ॥ १२ ॥

रामाब्दं स्याल्लयेशो वपुषि च निघनं सौम्यहीनं  
स्ववेदा लग्नेशो रन्ध्रयातो वपुषि निघनपः स्या-

वृणां वाणसंख्यम् ॥ नके तिग्मांशुमन्शौ सहज  
रिपुगतौ कण्टके रन्ध्रनाथे पारावाराब्धिसंख्यं  
तदनु शुभखगाः सल्लवक्षेत्रे खाग्निः ॥ १३ ॥

अर्थ—तीनही वर्षतक जीवता है. आठवें घरका पति लग्नमें हो. आठवें घरमें शुभग्रह नहीं पडा हो तो चालीस वर्षकी अवस्था हो लग्नका पति आठवें घरमें हो और आठवें घरका पति लग्नमें हो तो मनुष्योंकी पांचही वर्षकी आयु होती है. मकरराशिपर स्थित हुए शनि सूर्य तीसरे वा छठे घरमें हों और अष्टम घरका पति केंद्रमें हो तो चालीस वर्षकी अवस्था होनी है. जो यदि शुभग्रह शुभग्रहोंके नवांशकमें अथवा शुभग्रहोंकी राशिपर स्थित हों तो तीस वर्षकी आयु होती है ॥ १३ ॥

क्रूरहृष्टेऽङ्गनाथे यदि शुभविहगा वीर्यवन्तः सु-  
धांशौ संस्थे सौम्ये गणे चेद्गुणमुनितुलितं रन्ध्र-  
गैर्मध्यमायुः ॥ स्याच्चन्द्रादाहि पापैरथ तपनसुते  
व्यङ्गलग्ने हि याते रिःफेज्ञे रन्ध्रनाथे यदि बलर-  
हिते कङ्कपत्राक्षिसंख्यम् ॥ १४ ॥

अर्थ—जो यदि लग्नका पति पापग्रहोंकरके दृष्ट हो और शुभग्रह बलवन्त होवे और चंद्रमा शुभग्रहके नवांशमें स्थित होके किसी घरमें बैठा हो तो तिहत्तर वर्षकी अवस्था होती है और चंद्रमासे आठवें घरमें पापग्रह हो, दिनमें जन्म मया हो तो मध्यम आयु होती है इससे अनंतर शनि द्विस्वभाव-

संज्ञक लग्नमें पडा हो और बारहवें घरका पति तथा अष्टमं  
 वरका पति बलहीन होवे तो पच्चीस वर्षकी अवस्था होती  
 है ॥ १४ ॥

कर्केंऽङ्गे सप्तसप्तौ खलविहगयुते पुष्करस्थे द्वि-  
 जेशे केन्द्रे याते सुरेज्ये शरविशिखमितं पुष्करे  
 नीरगे वा ॥ सौम्ये पथिपभानौ व्ययनिधनगते  
 देहगे वा कवीज्यावेकक्षे व्योमवापैर्व्ययरिपु-  
 निधने लग्ननाथाढ्यचन्द्रे ॥ १५ ॥

अर्थ—कर्कलग्नमें सूर्य हो और पापग्रहसे युक्त हुआ चंद्रमा  
 दशवें घरमें स्थित होवे और बृहस्पति केन्द्रमें होवे तो पचपन  
 वर्षकी अवस्था होती है. बुध दशवें घरमें हो वा चौथे घरमें  
 होवे और चंद्रमा बारहवें आठवें घरमें वा लग्नमें होवे और  
 शुक्र, बृहस्पति एकराशिर कहीं स्थित हों तो पचास वर्षकी  
 आयु होती है और लग्नपतिसे युक्त हुआ चंद्रमा १२ । ६ ।  
 < इन घरोंमें पडा हो ॥ १५ ॥

ज्ञान्यंशे लग्ननाथे भुजगशरामितं स्यादथो सौम्य-  
 खेटा रन्ध्रोना देहनाथो व्ययरिपुनिधने पापयुक्  
 पष्टिरायुः ॥ राशीशो लग्ननाथो दिनमणिसहितो  
 सुत्युगो वाक्पतिश्चेत्त्रो केन्द्रे पष्टिरायुवंपुषि दिन-  
 पतिः शत्रुभौमान्वितश्चेत् ॥ १६ ॥

अर्थ—और लग्नेश शनिके नवांशकमें स्थित होवे तो अठावन वर्षकी आयु होती है. जो यदि शुभग्रह अष्टमजावके विना अन्य कहीं स्थित होवे और लग्नका पति पापग्रहसे युक्त होके १२ । ६ । ८ इन घरोंमें बैठा हो तो साठ वर्षकी अवस्था होती है. चंद्रमाकी राशिका पति सूर्यसहित होके ८ घरमें पड़े और लग्नेशभी आठवें हो और बृहस्पति केंद्रमें नहीं होवे तो साठ वर्षकी अवस्था होती है. अपने शत्रु और मंगलसे युक्त हुआ सूर्य लग्नमें हो ॥ १६ ॥

वागीशे हीनवीर्ये व्ययत्तनुजगते यामिनीशे ख-  
शैला धर्मे सर्वैः परायुः खलखगलवगैः केन्द्रया-  
तैरशीतिः ॥ क्रूरैः क्रूरक्षयातैः शुभभवनगतैः  
सौम्यखंडैः सवीर्यैर्लग्नेशे स्यात्परायुः सुतभवन-  
गतैः पष्टिरायुर्नराणाम् ॥ १७ ॥

अर्थ—बृहस्पति बलहीन हो और चंद्रमा १२ । ५ घरमें बैठा हो तो सत्तर वर्षकी अवस्था होती है और सब सौम्य ग्रह नववें स्थानमें पड़े हो तो परम आयु होवे और पापग्रहोंके नवांशकमें प्राप्त होके केंद्रमें पड़े हों तो अस्ती वर्षकी अवस्था होती है. पापग्रहोंकी राशिपर स्थित हो और शुभग्रह सौम्य ग्रहोंकी राशियोंपर स्थित होवें और लग्नका पति बलवान् होवे तो परम आयु होती है. जो सब सौम्य पाप ग्रह पांचवें घरमें स्थित होवें तो मनुष्योंकी साठ वर्षकी अवस्था होती है ॥ १७ ॥



सारंगस्यान्त्यभागे यदि वपुषि गते चाद्यभागे  
च केन्द्रे सौम्यैः खेटैः शतं स्याद्वसुसहजमुखे  
स्याच्चिरायुः समस्तैः ॥ लग्नात्प्रालेयभानोर्निध-  
नसदनपे रिःफकेन्द्रेऽष्टविंशत्केन्द्रे सौम्यग्रहोने  
यदि मृतिभवने कश्चिदास्ते खरामाः ॥ १८ ॥

अर्थ—धनुराशिके पिछले भागका नवांशक लग्नमें प्राप्त हो  
और शुभग्रह प्रथम भागके नवांशमें स्थित होके केन्द्रमें बैठे  
हों तो सौ वर्षकी अवस्था होती है और तीसरे, चौथे,  
आठवें घरमें सब ग्रह स्थित होवे तो मनुष्यकी दीर्घ आयु  
होती है. लग्नसे अथवा चंद्रमासे चारहवें घरमें अथवा केन्द्रमें  
अष्टम घरका पति हो तो अट्ठाईस वर्षकी अवस्था होती है.  
केन्द्रस्थानमें शुभ ग्रह नहीं हो और आठवें घरमें कोई शुभ  
ग्रह बैठे हों तो तीस वर्षकी अवस्था होती है ॥ १८ ॥

क्षीणे प्रालेयभानौ यदि सलसचरौ मृत्युगो  
मृत्युनाथः केन्द्रस्थो लग्ननाथो निजवलरहितः  
स्वाश्वितुल्यं तदायुः ॥ सौम्यरापोक्लिमस्थोर्दिनम-  
णिजविधू वैरिन्प्रालयस्थो तुल्यं फ्रुमाद्भुशः  
स्याद्य घनमृतिगो रिःफगो पापसेथौ ॥ १९ ॥  
हीनो स्वभानुना वा यदि हिममदसा व्योमनेत्रप्र-  
माणं केन्द्रस्थो सूर्यमन्दो यदि वपुषि कुजः पुष्प  
बाणाद्भुशं स्यात् ॥ शुकेग्यामद्भ्यातौ तनय-

भवनगौ साकल्ये खलशुभसहितश्चक्षितः स्या-  
दनायुः ॥ २० ॥

अर्थ—चंद्रमा क्षीण हो और क्रूर ग्रह आठवें घरमें बैठा हो और अष्टम घरका पति केंद्रमें स्थित हो, लग्नका पति निर्वल हो तो बीस वर्षकी अवस्था होती है. शुभ ग्रह आपोक्लिम ( ३ । ६ । ९ । १२ इन घरों ) में स्थित हों, शनि और चंद्रमा ६ । ८ घरमें स्थित हों तो बीस वर्षकी अवस्था होती है इससे अनन्तर दूसरे और आठवें घरमें तथा बारहवें घरमें रहित क्रूरग्रह बैठे हों तो बीस वर्षकी आयु होती है. जो यदि सूर्य, शनि केंद्रमें स्थित हों और मंगल लग्नमें होवे तो २० वर्षकी अवस्था होती है. शुक्र, बृहस्पति लग्नमें हों मंगल और पापग्रह ( शनि ) दोनों पांचवें घरमें हों तो कुछभी आयु नहीं होती है अर्थात् स्वल्प आयु हो और जन्म राशिका स्वामी सूर्यसहित हुए लग्नमें बैठा हो और अन्य पापग्रह तथा शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे तो स्वल्प ( बहुत कम ) आयु होती है ॥ १९ ॥ २० ॥

यत्संप्रोक्तं योगजं पूर्वमायुर्हारापारावारपारंग-  
मज्ञैः ॥ तस्मादायुः सारभूतं यदेत्पुण्याचारश्लोक-  
भाजां नराणाम् ॥ २१ ॥

अर्थ—जातकरूपी समुद्रको पार उलंचनको जाननेवाले पंडित जनोंने पहले जो योगोंसे प्राप्त हुई आयु कही है वही

पूर्वोक्त साररूप यह आयु सदाचार धर्ममें युक्त रहनेवाले  
जनोंकी इसी प्रकारसे होती है ॥ २१ ॥

बलावलविवेकेन पुष्करालयशालिनाम् ॥ सुम-  
नोभिरिदं देश्यमायुर्धर्मादिशालिनाम् ॥ २२ ॥

अर्थ—सूर्य आदि ग्रहोंके बलावलका विचारपूर्वक यह  
आयुर्योग उत्तमचित्तवाले जनोंने धर्मात्माजनोंको बताना  
चाहिये अर्थात् पाप करनेवालोंके यह योग नहीं मिलता  
है ॥ २२ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोपेऽलंकाराख्ये जातके  
मञ्जुलेऽस्मिन् ॥ आयुर्दायः श्रीगणेशेन वयैवृ-  
त्तैर्युक्तो बाहुपक्षैः प्रणीतः ॥ २३ ॥ इति श्रीजा-  
तकालंकारे पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अर्थ—मनोहर छन्दोंकरके रचे हुए, पोंडेतजनोंको प्रसन्न  
करनेवाले मनोहर इस जातकालंकार नामक ग्रंथमें श्रीगण-  
ेशकविने उत्तम वाईस श्लोकोंकरके आयुर्दाय अध्याय  
रचा है ॥ २३ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां  
पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ भावाध्यायः ६ ।

लग्नाधिपेऽर्थगे चेद्धनभवनपतौ लग्नयातेऽर्थवान्-  
स्याद्बुद्ध्याचारप्रवीणः परमसुकृतकृत् सारभृ-  
द्भोगशीलः ॥ भ्रातृस्थानेऽङ्गनाथे सहनभवनपे  
लग्नयातेऽल्पशक्तिः सद्बन्धू राजपूज्यः कुलजनसु-  
खदो मातृपक्षेण युक्तः ॥ १ ॥

अर्थ—लग्नका पति धनस्थानमें बैठा हो और धनस्थानका पति लग्नमें हो तो वह नर धनवान् होता है, बुद्धिके आचरणमें निपुण, उत्तम सुकृत करनेवाला, बलवान् और भोगशील ( पदार्थ भोगनेवाला ) होता है. लग्नका पति तीसरे घरमें हो और तीसरे घरका पति लग्नमें पडा हो तो अल्पबलवाला हो और श्रेष्ठ बंधुजनोंसे युक्त हो, कुलके जनोंको सुख देने-वाला और मातृपक्ष ( मामा नाना आदिकों ) से संयुक्त होता है ॥ १ ॥

तुर्येऽंशे लग्नयाते तदनु तनुपतौ तुर्यगे स्यात्क्षमा-  
वान् ताताज्ञाराजकार्यप्रगुणमतिद्युतः सद्गुरुः  
स्वीयपक्षः ॥ लग्नस्थे सूनुनाथेतनुजपदगते लग्न-  
नाथे मनस्वी विद्यालंकारयुक्तो निजकुलविदितो  
ज्ञानवान् मानसक्तः ॥ २ ॥

अर्थ—चौथे घरका पति लग्नमें पडे और लग्नका पति चौथे घरमें पडे तो क्षमा ( शांति ) वाला होवे; पिताकी

आज्ञामें और राज्यकार्यमें सरल बुद्धिवाला रहे, श्रेष्ठ गुरु-  
वाला अथवा श्रेष्ठ जनोंका गुरु होवे और अपने पक्षमें स्थित  
( कायम ) रहे. पंचम घरका पति लग्नमें स्थित हो और  
लग्नका पति पंचम घरमें स्थित होवे तो उत्तम मनवाला,  
विद्यासे विभूषित, अपने कुलमें विख्यात, ज्ञानवान् अभिमान  
शुक्त होता है ॥ २ ॥

पष्ठेशे लग्नयाते तदनु तनुपतौ पष्ठगे व्याधि-  
हीनो नित्यं द्रोहादिसक्तो वपुषि सवलवान्  
द्रव्यवान्संग्रही स्यात् ॥ मूर्तीशे कामयाते मद-  
नसदनपे मूर्तिगे तातसेवी लोलस्वान्तोऽङ्गनायां  
भवति हि मनुजः सेवकः शालकस्य ॥ ३ ॥

अर्थ—छठे घरका पति लग्नमें हो और लग्नका पति छठे  
घरमें बैठा होवे तो रोगी नहीं होता है और हमेशाह द्रोह (छल)  
आदि करनेमें आसक्त, शरीरमें बलवान् तथा संग्रह करनेवा-  
ला होता है. लग्नका पति सातवें घरमें बैठा हो और सातवें  
घरका पति लग्नमें पड़ा हो तो वह मनुष्य पिताकी सेवा कर-  
नेवाला श्रीविषे चंचलमनवाला और शालकके काम करने-  
वाला होता है ॥ ३ ॥

अद्विंशे रन्ध्रयाते निघनपदपतावद्गणे घृतबुद्धिः  
शूरशौर्यादिसक्तो निघनपदमियाद्भूपतलोकतो  
वा ॥ देहाधीशे शुभस्ये शुभभवनपतौ देदसंस्ये

विदेशी धर्मासक्तो नितान्तं सुरगुरुभजने तत्परो \_  
राजमान्यः ॥ ४ ॥

अर्थ—लग्नका पति आठवें घरमें होवे और आठवें घरका पति लग्नमें हो तो जुवा खेलनेमें बुद्धिवाला, शूर वीर, चोरी आदि करनेमें निपुण हो और राजासे अथवा लोगोंसे मृत्युको प्राप्त होवे, लग्नका पति नववें घरमें हो तो विदेशमें वास करे और निरन्तर धर्ममें आसक्त रहे, देवताके पूजनमें, गुरुकी सेवामें तत्पर रहे तथा राजासे मान्य होता है ॥ ४ ॥

कर्मस्थे लग्ननाथे गगनभवनपे लग्नगे भूपतिः  
स्यात् ख्यातो लाभे च रूपे गुरुभजनरतो लो-  
लुपो द्रव्यनाथः ॥ लाभेशो लग्नयाते तनुभवनपतौ  
लाभसंस्थे सुकर्मा दीर्घायुःक्षोणिनाथः शुभविभ-  
वयुतः कोविदो मानवः स्यात् ॥ ५ ॥

अर्थ—लग्नका पति दशवें घरमें हो और दशवें घरका पति लग्नमें हो तो राजा होता है, लाभ करनेमें और उत्तम रूपमें प्रसिद्ध ( विख्यात ) हो, गुरुकी सेवामें प्रीतिवाला, चंचल-चित्तवाला और द्रव्यका अधिपति होता है. ग्यारहवें घरका पति लग्नमें हो, और लग्नका पति ग्यारहवें घरमें हो तो सुन्दर कर्मवाला तथा दीर्घ आयुवाला होता है, राजा हो अथवा वह मनुष्य घरमें होवे तो सुन्दरकर्मवालासुन्दर ऐश्वर्यसे युक्त हो धीरजवान् और पंडित होता है ॥ ५ ॥

लग्नेशे रिःफयाते व्ययसदनपतौ लग्ने सर्वशत्रु-  
 बुद्ध्या हीनो नितान्तं कृपणतरमतिद्रव्यनाशी  
 विलोलः ॥ इत्थं तातादिकानामपि जनुपि तथा  
 खेचराणां हि योगाद्वाच्यं होरागमज्ञैस्तदनु तनुप-  
 युग् भार्गवे राजपूज्यैः ॥ ६ ॥

अर्थ—लग्नका पति वारहवें घरमें हो और वारहवें घरका पति लग्नमें हो तो सब जनोंका शत्रु हो अथवा सब जन उसके शत्रु होते हैं, वह निरंतर बुद्धिहीन होता है, अत्यंत कृपणबुद्धि हो और द्रव्यका नाश करनेवाला तथा चंचल स्वभाववाला होता है, इसही प्रकारसे जन्मसमयमें ग्रहोंके योगसे पिता आदिकोंका शुभाशुभ फल जातकशास्त्रवेत्ता पंडितोंने बताना चाहिये, जैसे पिताका घर दशवां है उसको लग्न समझे, ११ को धन भवन समझे, फिर पूर्वोक्त सब योगोंको विचारके पिताका सब हाल कहे, इसी प्रकार पुत्र आदि भवनसे पुत्र आदिकोंका हाल कहना और लग्नेशसे युक्त हुआ शुक्र ६ । ८ । १२ इन घरोंके बिना अन्य किसी घरमें बैठा हो तो वह नर राजपूज्य होता है अर्थात् मनोवांछित फलोंकी प्राप्तिवाला होता है ॥ ६ ॥

एवं स्वमत्या सुफलप्रबोधं श्रीजातकालंकरणं  
 मनोज्ञम् ॥ वृत्तरनन्तेशमितैर्निबद्धं मया मुदे  
 देवाविदामुदारम् ॥ ७ ॥

अर्थ—मैंने ( गणेशकविने ) ऐसे अगती बुद्धि करके सुन्दर फलोंको कहनेवाला पदपदार्थोंकरके मनोहर यह जानकालंकार दैवज्ञ ( ज्योतिषी जनों ) के आदनके वास्ते एक सौ दश श्लोकोंकरके रचा है ॥ ७ ॥

पुष्करालयवशा गुणसारा जातकोक्तिरमलेव  
मराला ॥ संस्कृता विहरता भवतां मे मानसेऽति  
सरले सुकवीनाम् ॥ ८ ॥

अर्थ—पुष्करालय अर्थात् ग्रहोंके अधीन अर्थात् शुभा-  
शुभसूचक ग्रहोंकरके उपयुक्त हुई गुणोंकी साररूपा संस्कृता  
अर्थात् मनोहर वाणीसे शुद्ध की हुई ऐसी मेरी यह  
जातकोक्ति ( जातकफलकथनरूपा वाणी ) सुन्दर कवि-  
योंके तुम्हारे अत्यंत सरल मानसहृदयमें क्रीडा करे  
कैसे कि जैसे पुष्कर ( जलस्थानमें ) रहनेवाली, गुणमारा  
और अमला ( शुद्धा दोषरहिता ), संस्कृता ( स्वभावसे  
रुचिर ) ऐसी हंसी मानससरोवरमें क्रीडा किया करती है तैसे.  
यहां इस श्लोकमें पूर्णोपमालंकार है ॥ ८ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूतितोपेऽलंकाराख्ये जातके  
मञ्जुलेऽस्मिन् ॥ भाषाध्यायःश्रीगणेशेन वर्यवृ-  
त्तैर्गुक्तोऽष्टाभिरेष प्रणीतः ॥ ९ ॥ इति श्रीजा-  
तकालंकारे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥



अर्थ—मनोहर छंदोंकरके रचे हुए पंडितजनोंको प्रसन्न करनेवाले मनोहर इस जातकालंकार नामक ग्रंथमें श्रीगणेश-कविने उत्तम आठ श्लोकोंकरके यह भावाध्याय रचा है ॥ ९ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

### अथ वंशाध्यायः ७ ।

अभूदवनिमण्डले गणकमण्डलाखण्डलः श्रुति-  
स्मृतिविहारभूर्विबुधमण्डलीमण्डनम् ॥ प्रचण्ड-  
गुणगुर्जराधिपसभाप्रभातप्रभाकवीन्द्रकुलभूषणं  
जगति काह्लजी कोविदः ॥ १ ॥

अर्थ—अवनिमंडल ( पृथ्वीतल ) में काह्लजी नामक पंडित भया वह जगत्में ज्योतिषियोंके प्रतिपादन करनेवाला, पंडितोंकी मंडलीका मंडन, शोभादायक, प्रचंडगुणवाले, गुर्जरदेशके अधिपति राजाकी सभामें प्रभातसमयके उजियालेके समान प्रकाशवाला, कर्वाँद्रजनोंके कुलका आभूषण ऐसा होता भया ॥ १ ॥

भारद्वाजकुले वभूव परमं तस्मात्सुतानां त्रयं  
ज्यायांस्तेष्वभवद् ग्रहज्ञतिलकः श्रीसूर्यदासः  
सुधीः ॥ श्रीमान् सर्वकलाभिस्तदनुजो गोपा-  
लनामाभवच्छ्रीमद्देवविदां वरस्तदनुजः श्रीराम-  
कृष्णोऽभवत् ॥ २ ॥

अर्थ—सो यह भारद्वाज कुल ( गोत्र ) में होता भया इसके तीन पुत्र भये तिनमें बड़ा दैवज्ञोंमें श्रेष्ठ श्रीमान् सूब-दास पंडित होता भया, तिसका छोटा भाई श्रीमान् सब कलाओंका निधि ( खजानारूप ) गोपालनामक होताभया, तिससे छोटा श्रीमद् दैवज्ञोंमें श्रेष्ठ श्रीरामरुष्ण नामक होता भया ॥ २ ॥

शाके मार्गणरामसायकधरा १५३५ संख्ये.  
नभस्ये तथा मासे ब्रध्नपुरे सुजातकमिदं चक्रे  
गणेशः सुधीः ॥ छन्दोलंकृतिकाव्यनाटककला-  
भिज्ञः शिवाध्यापकस्तत्र श्रीशिवविन्मुदे गणित-  
भूगोपालसूनुः स्वयम् ॥ ३ ॥

अर्थ—इनमें गोपाल नामक पंडितका पुत्र छंद, अलंकार, नाटक, कला ( चित्रकर्म ) इनको जाननेवाला और शिवना-मक आचार्यका शिष्य ज्योतिषसिद्धांतशास्त्रको जाननेवाला, गणेशनामक कवि श्रीशिवनामक पंडितवरके आनंदके वास्ते पांच, तीन, पांच एक संख्यामें प्रमित अर्थात् पंद्रह सौ पैंतीसके शाकेमें भाद्रपद महीनेमें सूर्यपुरविषे इस सुन्दर जातक ( जातकालंकार ) को करता भया ॥ ३ ॥

ये पठिष्यन्ति दैवज्ञास्तेपामायुःसुखे शिवम् ॥

भूयात्कैरवकुन्दाभा सुकीर्तिः सर्वतो दिशम् ॥ ४ ॥

अर्थ—जो देवज्ञजन इसको पढ़ेगे तिनके आयु सुखमें कल्याण बना रहो और कमल तथा कुन्दके पुष्पसमान सुन्दर स्वच्छ कीर्ति सब दिशाओंमें हो ॥ ४ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते स्वरितोपेऽलंकाराख्ये जातके  
मञ्जुलेऽस्मिन् ॥ वंशाध्यायः श्रीगणेशेन वृत्तै-  
र्युक्तो वेदैः शैलसंख्यः प्रणीतः ॥ ५ ॥ इति  
श्रीगणेशेन विरचितजातकालंकारे सप्तमोऽ-  
ध्यायः ॥ ७ ॥

अर्थ—मनोहर छंदोंकरके रचे हुए और पंडितजनोंको संतुष्ट करनेवाले इस मनोहर जातकालंकारविषे चार श्लोकों करके श्रीगणेशकविने यह सातवां वंशाध्याय अर्थात् अपने वंशविख्यातिका अध्याय रचा है ॥ ७ ॥

इति श्रीवेरीपुरनिवासिगौडवंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मज-  
बुधवसतिरामशास्त्रिविरचितजातकालंकारभा-  
षाटीकायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अन्दे खवाणाऽङ्कुरामिते वैशास्त्रे सिते नागतिथौ भृगौ च ॥  
वस्त्यादिरामांतबुधेन भाषाटीका कृता स्वल्पयियां मुदे वै ॥

इति भाषाटीकासहितो जातकालंकारः समाप्तः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,  
“दक्षीविकटेश्वर” स्टीम प्रेस,  
बन्याग-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,  
“श्रीविकटेश्वर” स्टीम प्रेस,  
खेतवाडी-मुंबई.

जाहिरात.  
ज्योतिष-ग्रन्थाः ।

की. र. आ.

- अर्धप्रकाश-भाषाटीकासमेत । इसमें तेजी-मन्दी  
वस्तु देखनेका विचार भलीभाँति लिखागयाहै .... ०-७५
- आनन्दप्रकाश-भाषाटीकासमेत । यह ग्रन्थ ज्योति-  
षियोंकोअतीवउपयोगी है । इसमें-रोगकी स्थिति,  
असाध्यरोग किस प्रकार शान्त होगा तथा  
रोगमुक्ति, स्नानदानादि कितनेही उन्नत विषय  
लिखेगये हैं. .... ०-३
- आर्यभटीय-( ज्योतिषशास्त्र ) संस्कृतटीका भाषाटी-  
कासमेत .... १-०
- कर्णकुतूहल-सटीक तथा उदाहरणसहित । ब्रह्मपक्षीय  
गणित ग्रन्थ ... ०-१२
- करणेन्दुशेखर-इसमें रन्यादि ग्रहोंकी सारणी  
भलीभाँति दीगईहै । तथा सिद्धान्तोक्त  
सब विषय संक्षेपसे इसमें आगये हैं .... ०-४

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,  
"लक्ष्मीविकटेश्वर" छापाखाना,  
कल्याण-मुंबई.

## “लक्ष्मीवैकटेश्वर” स्त्रीम्-य यन्त्रालयकी परमोयोगी स्वच्छ शुद्ध और सस्ती पुस्तकें ।

यह विषय आज ३० । ४० वर्षसे अधिक हुआ भारतवर्षमें प्रसिद्ध है कि, इस यन्त्रालयकी छरीदुर्ग पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुई हैं सो इस यन्त्रालयमें प्रत्येक विषयकी पुस्तकें जैसे—वैदिक वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मौमांसा, छन्द, ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू नाटक, कोष, वैद्यक, साम्प्रदायिक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाके प्रत्येक अक्षरपर विक्रीके अर्थ तैयार रहते हैं । शुद्धता स्वच्छता तथा कामतको उत्तमता ओर जिल्दकी बँधाई देशभरमें विख्यात है । इतनी उत्तमता होनेपरभी दाम बहुतही मस्तै रखे गये हैं और कमीशनभी घृयकू काट दिया जाता है । ऐसी सरलता पाठकोंमें मिलना असम्भव है संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अग्य अगनी २ आवइकतानुसार पुस्तकोंके मंगानेमें घुटन बरना चाहिये. ऐसा उत्तम, सस्ता और माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है. ‘सुधीपत्र’ मगा देखो ।

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णराम,

“लक्ष्मीवैकटेश्वर” छापाखाना,

कल्याण-मुंबई.